CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य-रामप्रपन्नाचार्य

चौतनिद्र प्रवर्तित त्रिशत वर्षाधिक प्राचीनतम श्री वैष्णव संस्थानिया

ज.गु.श्री रामानन्दाचार्य-पीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

कार्यालय ॥ आचार्यपीठ श्री कोशलेन्द्रमठ सरखेजरोड
पो० पालडी अहमदाबाद ३८०००७
दूरभाष- ४११००१

संरक्षक 卐 शेठ श्री अमरशी कुरजी मजिठिया
सम्पादक 卐 जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी
सहसम्पादक 卐 पं. श्री शरचन्द्र शास्त्री
व्यवस्थापक 卐 म. म. स्वामी रामावतारदासजी (रत्न)
प्रकाशक 卐 स्वामी सीतारामाचार्यजी

अनातरं जानकिजानिचिन्तकं महाबलं श्रीपवमानसम्भवम् ।
विदेहजाप्राप्तमगाधसन्मतिं नमामि भक्त्या धिषणा विशुद्धये ।।

महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्याः)

वर्ष १७ विक्रमाब्द २०५१ अङ्क ९
श्रीरामानन्दाब्द ६९५ नवम्बर १९९५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri. Funding: Tata Trusts. Digitization: Dr. Baleeki University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वात्यां कुजे शैवतिथौ तु कार्तिके
कृष्णेऽञ्जनागर्भत एव मेषके ।
श्रीमान् कपीट्प्रादुरभूत्परन्तपो
व्रतादिना तत्र तदुत्सवं चरेत् ॥
(आनन्दभाष्यकाराः)

इस जगदाचार्य श्री के दिव्य आज्ञा के अनुसार दिनाङ्क २३।१०।९५ को आनन्दभाष्य सिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी के सान्निध्य में शास्त्रीय विधानानुसार श्रीसम्प्रदाय के तृतीय आचार्य श्रीहनुमानजी की जयन्ती मनाई गयी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'सन्ति उभयलिङ्गाः श्रुतयो ब्रह्मविषयाः। सर्व्वकर्मा सर्व्वकामः सर्व्वगन्धः सर्व्वरस इत्येवमाद्या सविशेषालिङ्गाः। अस्थूलमनणुम् अह्रस्वम् अदीर्घम् इत्येवमाद्याश्च निर्विशेषलिङ्गाः।' इन दो प्रकार की श्रुतियों के होने से इनमें परस्पर विरोध प्रतीत होता है। इनमें किसको माना जाये और किसको नहीं! दोनों श्रुति वाक्य हैं। अत एव समान रूप से प्रामाणिक एवं आदरणीय हैं। मनुजी ने कहा है-'श्रुतिद्वैधं तु यत्रस्यात्तत्र धर्मावुभौस्मृतौ,। उभावपि हि तौ धर्मौ सम्यगुक्तौ मनीषिभिः॥' अतः ब्रह्म विचार के प्रकरण में श्रीबादरायणजी ने ब्रह्मको वेद गम्य (शास्त्रयोनित्वात्) कहने के साथ ही यह भी बतला दिया कि वेद में तो सविशेष और निर्विशेष दो प्रकार के प्रतिपादन हैं। जिससे विरोध की प्रतीति होगी। अतः उनका समन्वय कर जानें (तत्तु समन्वयात्)तब समीक्षकजी को विशिष्ट और अद्वैत का समन्वय अस मीचीन क्यों मालूल पडता है! नियमतः दो विरोधी धर्म एक ही अधिकरण में एक ही काल में नहीं रह सकते है(सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुनः) परन्तु वे अधिकरण भेद से एक ही काल में एवं काल भेद से एक ही अधिकरण में एक साथ रह सकते हैं। ब्रह्म शब्द अपने नाम से ही अनन्त आकार वाला है और उसके इस अनन्त देश में 'पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्द्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाऽभवत् पुनः। शु॰ य॰ ३१।३-४।' दोनों परस्पर विरोधी धर्म एक ही काल में एक ही अधिकरण के पृथक् पृथक् पादों (देशों) में स्थित हैं। इनमें कोई विरोध नहीं प्रत्युत पूर्ण समन्वय है। श्रीशङ्कराचार्यजी ने जो ऊपर कहा है कि 'सन्ति उभय लिङ्गाः श्रुतयो ब्रह्म विषयाः।' इसमें समीक्षक केवल निर्विशेषलिङ्ग को मानते हैं और सविशेष लिङ्ग को अस्वी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार करते हैं, यह एक प्रकार के श्रुति वाक्य का अनादर और सिद्धान्त विरुद्ध हैं। निर्विशेष लिङ्ग श्रुति वाक्य सविशेष बिङ्ग श्रुति वाक्यों को बाधित नहीं कर सकता क्योंकि दोनों तुल्यबल है। यदि समीक्षकजी अद्वैत शब्द से कहें कि हम अद्वैत अर्थात् सविशेष और निर्विशेष दोनों का प्रतिषेध करते हैं, तो वह दोनों प्रकार के श्रुति वाक्यों का अनादर एवं वेद बाह्य हो जायेगा। अतः दोनों प्रकार के वाक्यों में समन्वय और अविरोध मानना ही होगा और बौद्धादि का सिद्धान्त मार्ग होगा। विशिष्टाद्वैत में दोनों प्रकार की श्रुतियों का पूर्ण सामञ्जस है वेदविद्यानिधि जगद्गुरु श्रीश्रुतानन्दाचार्य सिद्धान्त भास्करप्रणीतः सर्व श्रुतिसमन्वयः—इसप्रकार है—

नत्वा रामं परंब्रह्म श्यामानन्दं गुरुं तथा।
कुर्वे श्रुत्यविरोधाय सर्वश्रुतिसमन्वयम् ॥१॥

अद्वैतबोधिकाः काश्चित काश्चिद् द्वैतस्य बोधिकाः।
षटकश्रुतयः काश्चिदन्तर्यामि प्रबोधिकाः ॥२॥

अप्रामाण्यं भवेत् तासां विरोधेऽभिमते मिथः।
विशिष्टाद्वैतिभिस्तासां क्रियतेऽतः समन्वयः ॥३॥

अद्वैतश्रुतयो बोध्या विशिष्ट ब्रह्मबोधिकाः।
नान्यश्रुतिमतानां हि तत्त्वानां प्रतिषेधिकाः ॥४॥

परंब्रह्म च तद्वाच्यं त्वद्वाच्यं त्वच्छरीरकम्।
तत्त्वमसीतिवाक्येन तूक्तोऽभेदस्तयोर्द्वयोः ॥५॥

द्वैत श्रुतिसमूहस्तु विद्वद्भिः सम्मतः खलु।
चिदचिदीशतत्त्वानां पार्थक्येनावबोधकः ॥६॥

आत्मत्वमीश्वरस्याथ चिदचितोश्च देहता।
सर्वाभिर्विनिवेद्येते षटकश्रुतिभिः किल ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदान्त तत्त्वविद्भिश्च कार्यकारणभेदतः ।
चिदचिद्भ्यां विशिष्टं हि ब्रह्म च द्विविधं मतम् ॥८॥

स्थूलाचिच्चिद्विशिष्टं हि ब्रह्म कार्यं प्रकीर्त्तितम् ।
सूक्ष्माचिच्चिद्विशिष्टं तु ब्रह्म कारणमुच्यते ॥९॥

अद्वैतं च मतं श्रौतं ब्रह्मणोश्च विशिष्टयोः ।
विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तस्तस्माच्छ्रुत्यनुमोदितः ॥१०॥

अतएवास्मदाचार्यवोधायनादिसम्मतः ।
विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तो लोके विजयतेतराम् ॥११॥

इसप्रकार विशिष्ट और अद्वैत का समन्वय वेद सिद्धान्त सिद्ध है । समीक्षकजी का अद्वैत में द्वैतरूप विशेषण लगाकर विशिष्ट बनाने का प्रश्न ही गलत है । अद्वैत में द्वैतरूप विशेष नहीं लगाया गया है प्रत्युत उसमें विशिष्ट विशेषण लगाकर विशिष्टाद्वैत बना है । अतः प्रश्न ही गलत है । पुनः यह प्रश्न भी गलत है कि वह अद्वैत विशिष्ट वन क्यों जायगा ? विशेषण और विशेष्य में अविच्छेद्य सम्बन्ध होने से, विशेषण विशेष्य में समवाय या संयुक्त समवाय सम्बन्ध से अविच्छेद्य रहता है । स्थूल चिदचिद् और सूक्ष्म चिदचित् अर्थात् सृष्टि कालिक जगत् और प्रलय कालिक जगत् अविच्छेद्य सम्बन्ध के साथ ब्रह्म में रहते हैं । अतः दोनों में विशेषण विशेष्य भावेन विशिष्टाद्वैत (अविच्छेद्य) सम्बन्ध होने से विशिष्टाद्वैत सर्वथा उपपन्न है । पुनश्च समीक्षकजी ने सत् शास्त्रों में विशिष्टाद्वैत आनुपूर्वी अनुपलब्धी का जो उल्लेख किया है वह अविचारित रमणीय एवं सत् शास्त्रानालोडनत्व का सूचक है । श्रीमद्वाल्मीकि संहिता के २ अध्याय के ४३ वां श्लोक इसप्रकार है –

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'विशिष्टाद्वैत–सिद्धान्ते तत्त्वत्रयमुदीरितम् ।
तच्छ्रोतुमभिवाञ्छामः कृपया ब्रूहि नः प्रभो ? ।।'

इसप्रकार ऋषियों के प्रश्न करने पर महर्षि श्रीवाल्मीकिजी ने ४१ से ८६ श्लोकों तक के ४१ श्लोकों में विशिष्टाद्वैत तत्त्व का निरूपण किया है जो वहीं द्रष्टव्य है । विस्तार भय से पूरा नहीं लिख रहे हैं ।

द्वितीय प्रकरण (पृ० ६–९)

[अद्वैत] सिद्धान्त–आत्मा से अन्य, सजातीय या विजातीय या आत्मनिष्ठ (स्वगत) वस्तु कुछ भी पारमार्थिक सत्य नहीं है, स्वगत, सजातीय' विजातीय भेद त्रय से शून्य एक मात्र आत्मा ही पारमार्थिक सत्य है ।

[विशिष्टाद्वैत] सिद्धान्त–आत्मा (परमात्मा) चेतनत्वेन स्वजातीय जीवों से तथा अचेतनत्वेन विजातीय प्रधानादि जड पदार्थों से, तथा स्वगत कल्याण कारक गुणों से वस्तुतः भिन्न है, और आत्मा से अन्य सजातीय जीवादि पदार्थ वस्तुतः सत्य हैं ।

[समीक्षा]–'मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति (बृ०४।४।१९) 'यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितरं पश्यति, यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केन कं पश्येत् (बृ० ४।५।१५) जो इस अद्वितीय ब्रह्म तत्त्व में नाना यानी अनेक को देखता है, वह मृत्यु परम्परा को प्राप्त होता है, जब नानावस्था में द्वैत की तरह होता है, तब अज्ञ जीव अन्य होकर अन्य को देखता है, जब उसे आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है, तब उसके लिये सब कुछ आत्मा ही हो जाता है, ऐसी अवस्था में वह तत्त्वदर्शी पृथक् होकर किस इन्द्रिय से, किस वस्तु को कैसे देख सकता है ? नहीं देख सकता अर्थात् आत्मा से अतिरिक्त कुछ वस्तु न रहने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के कारण, करण, कर्ता एवं कर्म तथा द्रष्टा, दृश्य एवं दर्शन रूपी त्रिपुटी-भेद का सर्वथा अभाव हो जाता है, इस श्रुति के 'नानेव' 'द्वैतमिव' ये पद भी द्रष्टव्य हैं, इव शब्द के प्रयोग से जगत् का नानात्व, तथा द्वैत प्रतीति भ्रान्ति जन्य है, तत्त्वतः एकत्व ही सत्य है, यह सिद्धान्त निर्विवाद सिद्ध होता है, अत एव 'एकत्वमनुपश्यतः (य. सं. ४०।७) यह श्रुति स्पष्ट एकत्व दर्शन का अनुमोदन करती है। जब सम्पूर्ण विश्व ब्रह्मरूप एक अभिन्न ही हो जाता है। तब उसमें जरासा भी लवलेश भेद किस तरह रह सकता है ? नहीं रह सकता। नानात्व दर्शन का निषेध एकत्व दर्शन में ही पर्यवसित होता है। जो चित् अचित् रूप शरीर विशिष्ट ब्रह्म के अन्तर्गत चित्-अचित् एवं अन्तर्यामी रूप तीन तत्त्वों का भेद रूप सत्य नानात्व स्वीकार करते हैं, उनके मत में श्रुति प्रतिपादित नानात्व का निषेध कैसे हो सकेगा ? सत्य का निषेध क्यों कर होगा ?

और, 'यदाह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं कुरुते, अथ तस्य भयं भवति (तै० २।७।१) जब कोई भी मनुष्य इस अद्वितीय विज्ञानघन ब्रह्मतत्त्व में थोडा सा भी भेद करता है, उसको भय होता है, यह श्रुतिभेद दर्शन से भय की प्राप्ति प्रतिपादन करती है, अर्थात् 'अभयार्थी को भेद दर्शन नहीं अभेद दर्शन करना चाहिए, यह सूचन करती है।

और, 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत (छा. ३।३।१) यह श्रुति सर्वों को ब्रह्म रूप से एक अभिन्न निश्चय कराकर मुमुक्षु को रागद्वेष के अभाव द्वारा शान्ति समर्पण करती है। नानात्व के अनुसन्धान से राग और द्वेष होता है, यह लोक प्रसिद्ध है कि रागद्वेष वाला मनुष्य कैसे शान्त रह सकता है ! तथा एकत्व के अनुसन्धान से रागद्वेष कैसे हो सकता है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं हो सकता है। 'तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः (य. सं. ४०।७) यह श्रुति एकत्व दर्शन से राग द्वेष रूपी मोह शोक का अभाव स्पष्टतः प्रतिपादन करती है। इसलिये नानात्व दर्शन से किसी को भी शान्ति मिल नहीं सकती है।

और, विष्णु पुराण में भेद ज्ञान को मोह (भ्रान्ति) रूप कहा है। अतएव उसके परित्याग का भी विधान किया है—'एक समरतं यदिहास्ति किञ्चित्, तदच्युतो नास्ति परं ततोऽन्यत्। सोऽहं स च त्वं स च सर्वमेतदात्मस्वरूपं त्यजभेद मोहम्॥ इस संसार में जो कुछ है वह सब आत्मा ही है और वह अविनाशी है, उससे अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है, मैं तू और ये सब आत्म स्वरूप ही है, अतः भेद ज्ञान का मोह छोड।

अतः परमार्थतः किसी भी प्रकार से भेद मानना शास्त्रानुकूल नहीं हो सकता'

[परीक्षा]—शंकराचार्यजी का उपरोक्त सिद्धान्त वाक्य भ्रामक पद रचना दोष ग्रस्त होने से अस्पष्ट और भ्रामक है। जो इस प्रकार है—प्रथम वाक्य—'आत्मा से अन्य सजातीय या विजातीय या आत्मनिष्ठ (स्वगत) वस्तु कुछ भी पारमार्थिक सत्य नहीं हैं' इसप्रकार रचित है कि इसका कोई स्पष्ट अर्थ करना सम्भव नहीं है। इस वाक्य में कथित कुछ भी पारमार्थिक सत्य नहीं हैं' उपवाक्य में नहीं हैं' क्रिया पद द्वारा निषेध या अभाव किस उद्देश्य पद का किया जा रहा है? यह स्पष्ट नहीं हैं क्योंकि इससे दो अर्थ निकलते हैं—(१) कुछ भी पारमार्थिक वस्तु सत्य नहीं है और (२) कुछ भी वस्तु पारमार्थिक सत्य नहीं है। पहले में पारमार्थिक वस्तु की सत्यता का निषेध है और दूसरे में वस्तु की पारमार्थिक सत्यता का। पुनः इस वाक्य में जो 'पारमार्थिक' शब्द कथित है वह कोश सिद्ध शब्द नहीं है जिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से शब्द कोश द्वारा इसका अर्थ प्रसिद्ध हो और अर्थ का निश्चय हो। शब्द विश्लेषण के द्वारा परम+अर्थ=परमार्थ तद्विषय सम्बन्धित पारमार्थिक शब्द है। इसमें परम शब्द का अर्थ-'परमं स्यादनुज्ञायामव्ययं पर्से परे-मे० १११।४७, परम नियोगे क्षेपे च मे० अव्यय ६०।' एवं अर्थ शब्द का अर्थ-'अर्थो विषयार्थ नयोर्धन कारण वस्तुषु। अभिधेये च शब्दानां निवृत्तौ च प्रयोजने।मे०।' के अनुसार अनेकार्थक होते हैं। इनमें लेखक का तात्पर्य किस में है यह स्पष्ट नहीं है। पुनः सत्य शब्द से लेखक का क्या तात्पर्य है? 'सत्यं शपथ तथ्यो:-अ. को.' सत्यम प्रश्नेऽभ्युपगमे-मे०। सत् और सत्य में अन्तर है-'सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत्-अ. को. ३।३।८३। लेखक ने पारमार्थिक' कह कर सत्य को दो प्रकार का बना दिया है-अपारमार्थिक सत्य और पारमार्थिक सत्य। वेद गीता और ब्रह्मसूत्र में ऐसा अपारमार्थिक सत्य और पारमार्थिक सत्य का प्रतिपादन नहीं है। सत्य का विपरीत मिथ्या होता है। यह मिथ्या दो प्रकार की होती है-

१ मिथ्या साधारण और २ अत्यन्त मिथ्या, जैसे-'बन्ध्या का लड़का, आकाश पुष्प का मुकुट पहने हुये, मृगतृष्णा के जल में स्नान कर, कच्छपी दुग्ध को पीने के उपरान्त, शशशृंग के बाजा को बजाकर अष्टम स्वर से गान किया। तथा 'अन्धेरे घर में हौआ की आंखें चमकती हैं।' इसके प्रथम में मिथ्या संसर्ग है तथा दूसरे में 'हौआ' की कहीं सत्ता ही नहीं होने से अत्यन्त मिथ्या है। लेखक का पारमार्थिक और तद्विपरीत अपारमार्थिक शब्द से क्या इष्ट है तथा पारमार्थिक सत्य और अपारमार्थिक सत्य से क्या इष्ट है, इसका स्पष्टीकरण नहीं होने तथा इन शब्दों का कोशार्थ नहीं होने से बिना इसका तात्पर्यार्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बताये वे शब्द भ्रामक हैं और वह वाक्य भ्रामक पद रचना दोष से प्रसित है। कोश में–'मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकताः' 'भ्रान्तिर्मिथ्यामति भ्रमः' अ. को. १।४।५' में मिथ्या दृष्टिवालों को नास्तिक तथा मिथ्या बुद्धि को भ्रान्ति और भ्रम कहा गया है। अतः 'अपारमार्थिक सत्य' नास्तिकता और भ्रम है। सत्य सत्य है और वह सदा सत्य है। सत्य 'तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवः' यथार्थ है यथार्थ ज्ञान हैं और 'सत् विद्यमानं सत्यम्' सत्तावान् पदार्थ सत्य पदार्थ है। सत्य पदार्थ नित्य कारण रूप और अनित्य कार्य रूप होता है। अनित्य का अर्थ मिथ्या अर्थात् असत्ता नहीं है। अचित् पदार्थ कारण कार्य रूप से नित्य तथा अनित्य है। इनका अत्यन्ताभाव नहीं होता है। मिथ्या पदार्थ का अस्तित्व नहीं होने से उसका अत्यन्ताभाव है। कारण में कार्य का अभाव सामयिकाभाव (सादि सान्त) है। अतः भ्रामक पद रचना वाक्य होने से न तो वह समीचीन है और न विचार का विषय बनता है। इसीप्रकार दूसरा वाक्य–'स्वगत, सजातीय विजातीय भेद त्रय से शून्य एक मात्र आत्मा ही सत्य है' भी भ्रामक हैं। यदि इसे स्वीकार कर लिया जाये तो उस आत्मा से भिन्न होने के कारण वक्ता शंकराचार्यजी मिथ्या सिद्ध होते हैं तब उस मिथ्या का यह वाक्य स्वतः और भी मिथ्या (असत्य) सिद्ध हो जाता है। तब मिथ्या मूर्ति के कहा मिथ्या (असत्य) वाक्य की प्रामाणिकता कट गयी।

यदि वे सत्य वक्ता बनते हैं तो स्वयं सत्य सिद्ध हो जाते हैं और यदि स्वयं को मिथ्या बनाते हैं तो उन मिथ्या का कथन और भी मिथ्या (असत्य) बनजाता है। अतः उभयतः असामञ्जस्य होने से वह कथन भ्रान्त है। ऐसा कहना 'मुखे मे जिह्वा नास्ति' के कथन के समान वदतोव्याघात पूर्ण एवं एक सिद्धान्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को मानकर उसके विरुद्ध कथन अपसिद्धान्त है। पुनः आत्मा और परमात्मा, पुरुष और पुरुषोत्तम भेद से आत्मा और परमात्मा का सजातीय भेद प्रमाण सिद्ध है-'ज्ञानाधिकरणमात्मा स द्विविधः जीवात्मा परमात्मा च। तत्र परमात्मा सर्वज्ञ एक एव, जीवः प्रतिशरीरं भिन्नः नित्यश्च। त.सं.।' 'द्वाविमौपुरुषौलोके क्षरश्चाक्षर ऐव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।' उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः। यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥ यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥ यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। ससर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत॥' इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृत कृत्यश्च भारत। गी० १५।१६-२० 'उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः। परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः॥ १३।२२।' अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः। शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते, जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। २।७।' वेदाहमेत पुरुषं महान्तम् आदित्य वर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय। शु. य. ३१।१८॥' अतः आत्मा का स्वगत भेद शून्य कहना श्रुति स्मृति और न्यायादि षट्शास्त्र विरुद्ध है। क्योंकि आत्मा के सम्बन्ध में न्याय शास्त्र का विचार ही वैशेशिक, मीमांसा, सांख्य, योग और वेदान्त को मान्य है। उपरोक्त 'यस्मात्क्षरमतीतोऽहम्' वाक्य से उसका विजातीय जड़ पदार्थ से सिद्ध है तथा, वैशेषिक न्याय, सांख्य योग, मीमांसा-वेदान्त इन षट्शास्त्रों से भी उसका यह विजातीय भेद सिद्ध है। इसी प्रकार विशेषण विशेष्य, शरीर शरीरी का स्वगत भेद भी सिद्ध है।

तब उसको इन भेद त्रय से शून्य कहना अप्रामाणिक है। वहाँ एक भी श्रुति वाक्य नहीं उपस्थापित किया गया है जिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में यह लिखा हो कि परमात्मा सजातीय विजातीय स्वगत भेद त्रय शून्य है। अतः उक्त कथन श्रुति बाह्य है। इसप्रकार शङ्कराचार्यजी के उपरोक्त सिद्धान्त वाक्य की समीक्षा कर दी गयी।

अब समीक्षकजी की समीक्षा की परीक्षा की जाती है। 'मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति' इस ऋषि प्रोक्त उपनिषद् वाक्य को अपौरुषेय वाक्य अथवा ईश्वरोक्त वेद वाक्य–'वेदाहमेवं पुरुषं महान्तम् आदित्य वर्णं तमसः परस्मात्। तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय। शु.य. ३१।१८।' के परिपेक्ष्य में एक वाक्यता कर पढ़ें। यहाँ 'पुरुषं' के साथ 'महान्तम्' विशेषण इसे सामान्य पुरुष जीवात्माओं से भेद करता है 'तमेव विदित्वा' से उसी पुरुषोत्तम का ज्ञेयत्व उपदिष्ट है। एवं 'नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय' से अन्य मार्गों का व्यावर्तन है।

तब उपरोक्त उपनिषद् वाक्य के 'नानेव' शब्द का तात्पर्य उस महान्तम् पुरुष (पुरुषोत्तम) को 'तत्र परमात्मा एक एव' न मान कर नाना के समान मानने के निषेध में ही है न कि उस महान्तम् पुरुष का अन्य पुरुषों से भेद में यदि वैसा होता तो 'महान्तम्' विशेषण पद असमर्थ और व्यर्थ विशेषण होने का दोष वेद वाक्य में आता और वेद वाक्य अप्रमाणिक हो जायेगा। 'यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितरं पश्यति, यत्त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केन कं पश्येत् (बृ.)' का अर्थ समझने के लिये श्रीमद्भगवद्गीता के इन श्लोकों को ध्यान में रखना चाहिए–'यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया। यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति। सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते योग युक्तात्मा सर्वत्र सम दर्शनः। यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्माहं न प्रणश्यामि च मे न प्रणश्यति। मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्त मूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः। न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः । यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्र गो महान् । तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय । सर्वा भूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् । प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः । भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् । मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते स चराचरम् । हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्वतते' ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना । अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे । समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम । विनश्यत्स्वपि नश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति । समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् । न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्' यदाभूतपृथग्भाव मेकस्थमनुपश्यति । तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा । पश्य मे पार्थरूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः । नाना विधानि दिव्यादि नाना वर्णाकृतीनि च ॥ इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्यसचराचरम् । ममदेहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि नतु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा । दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् । एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमंरूपमैश्वरम्' । अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुत दर्शनम् । अनेक दिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् । दिव्यामाल्याम्बर धरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् । दिविसूर्य सहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिताम् । यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः । तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा । अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा । नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्य एवं विधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा । भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥' अतः उपरोक्त श्रुति वृ. ४।४।१९ के प्रश्न वाक्य का उत्तर जो समीक्षकजी ने लिखा है-'नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देख सकता है' वह सर्वथा भ्रान्त है और विपरीत है। उक्त बृहदारण्यक श्रुति में ही–आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः (बृ. २।४।५)' एवं 'तं न पश्यति। अकृत्नो हि सः (बृ. १।४।७) में परमात्मा को द्रष्टव्य कहा है। इस श्रुति वाक्य 'द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः' का उपाय 'श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः। मत्वा च सततं ध्येय एते दर्शन हेतवः।' कहा गया है। इसका उपरोक्त गोता वाक्य–'ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप' के साथ पूर्ण एकवाक्यता है। अतः उपरोक्त श्रुति 'यत्र द्वैतमिव भवति तदितरं पश्यति यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केन कं पश्यति (बृ. ४।५।१५) कहती है कि 'जहाँ द्वैत के समान होता है वही दूसरे को देखता है। यदि सभी एक ही आत्मा मात्र हो तो कौन किसको देखेगा। श्रुति ने देखना प्रतिपादित किया है। अतः सभी एक आत्मा मात्र नहीं है प्रत्युत द्वैत के समान हैं। तभी श्रुति द्वारा 'द्रष्टव्यः' वाक्य सत्य होगा। यहाँ विचारणीय है कि इस श्रुति में 'यत्र द्वैतं भवति' न कह कर 'यत्र द्वैतमिव भवति' क्यों कहा गया है, यदि सर्वथा पार्थक्य इष्ट होता तो 'यत्र द्वैतं भवति' वाक्य रहता। किन्तु सर्वथा पार्थक्य या विच्छेद्य सम्बन्ध इष्ट नही है। विशेषण विशेष्य या शरीर–शरीरी सम्बन्ध इष्ट है। अविच्छेद्य सम्बन्ध इष्ट है। अतः 'यत्र द्वैतमिव भवति' वाक्य कहा है। यत्र द्वैत भवति से द्वैतवाद सिद्ध होता है और यत्र द्वैतमिव भवति से विशिष्टाद्वैत सिद्ध होता है। जीवात्मा परमात्मा को देखता है अतः यह द्वैत नहीं परन्तु द्वैत के समान है। यही उक्त श्रुतिवाक्य का तात्पर्य है, न कि जैसा समीक्षकजी कहते हैं–'नहीं देख सकता है। अतः उक्त श्रुति समीक्षकजी एवं शङ्कराचार्यजी के विरुद्ध है। 'इव' यह उपमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बोधक है। उपमा में उपमान और उपमेय में तादात्म्य नहीं होता केवल कुछ धर्मों में सादृश्य होता है। अतः इव पद भेद बोधक है न कि भेद का प्रतिषेधक। समीक्षकजी का यह कथन सर्वदा गलत है कि जब जीव को आत्मज्ञान प्राप्त होजाता है तब उसके लिये सब कुछ आत्मा ही हो जाता है, ऐसी अवस्था में वह तत्तदर्शी पृथक् होकर किस इन्द्रिय से किस वस्तु को कैसे देख सकता है ? नहीं देख सकता अर्थात् आत्मा से अतिरिक्त कुछ भी वस्तु न रहने के कारण करण कर्ता एवं कर्म तथा द्रष्टा, दृश्य एवं दर्शन रूपी त्रिपुटी भेद का सर्वथा अभाव हो जाता है।' श्रीमद्भगवद्गीता के उपरोक्त वाक्यों से सिद्ध है जीव को ज्ञान प्राप्त हो जाने पर उसमें कर्तृत्व, द्रष्टृत्व आदि रहता है तथा वह आत्मा हो नहीं अपितु परमात्मा को भी देखता है। पुनः 'उत्क्रामन्तं स्थितं वादि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानु पश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।' से वह इन्द्रियों से अतिरिक्त ज्ञान चक्षु से देखता है, दिव्य दृष्टि से देखता है और अपने आत्म प्रकाश से दूसरे आत्मा को एक दीप दूसरे दीप को देखने या प्रकाशित करने के समान देखता है 'आत्मनात्मानं पश्यनात्मनि तुष्यति' 'ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना।' करण कर्ता एवं कर्म ही नहीं अपितु अधिकरण आदि तथा द्रष्टा दृश्य एवं उसके कार्य दर्शन ही नहीं अपितु दर्शन क्रिया के सहायक प्रकाशादि का भाव रहता है। ब्रह्मविद ब्रह्मभाव को प्राप्त किये हुये को भी परमात्मा की भक्ति करनी पडती है और उसके पश्चात् वह ब्रह्म में प्रवेश कर परंधाम को प्राप्त करता है-'ब्रह्मभूत प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥ मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः। ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्॥' समीक्षजी का यह कथन भी भ्रान्त है कि' इस श्रुति के 'नानेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'द्वैतमिव' ये पद भी द्रष्टव्य है. इव शब्द के प्रयोग से जगत् के नानात्व तथा द्वैत प्रतीति भ्रान्ति जन्य है, तत्त्वतः एकत्व ही सत्य है, यह सिद्धान्त निर्विवाद सिद्ध होता है ।'

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है वहाँ नानात्व का निषेध परमात्मा को संख्या के सम्बन्ध में है जीवात्मा और प्रकृति अर्थात् चिदचित् के सम्बन्ध में नहीं है । अतः यह नानात्व तथा द्वैत प्रतीत परमात्मा के विषय में ही भ्रान्ति है, परमात्मा ही स्वतः एक है एवं विशेषण विशेष्य भाव या शेषी शेष भाव या शरीर शरीरीभाव से एक के समान एकेव है । चिदचित् का परमात्मा के साथ समन्वय एक के समान अर्थ में है न कि एक ही (एकैव) के अर्थ में यह अर्थ समन्वित सिद्धान्त कहा जा सकता है । समीक्षक का सिद्धान्त सर्वविवाद सिद्धान्त है । क्योंकि इसका न्याय वैशेषिकादि सभी दर्शनों से विरोध और विवाद है, पुनः वेदान्त दर्शन के भी द्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, अचिन्त्यभेद वादादि सभी सिद्धान्तों से पूर्ण विरोध है । सभी यथार्थवादी वस्तुवादी दर्शन है और इनका अद्वैत विवर्त (भ्रम) वादी मायावादी दर्शन, अतः सभीसे इसका पूर्ण विरोध है । इनका सखी दर्शन या समान विचार वाला दर्शन में बौद्धदर्शन (शून्यवाद, विज्ञान वादादि) ही है । अतः दार्शनिकों ने इन्हें प्रच्छन्न बौद्ध भी कहा है । केवल उसी के साथ इनके मतको निर्विवाद कहा जा सकता है । अतः उसीके परिप्रेक्ष्य में वे यह निर्विवाद सिद्ध है । ऐसा लिखा हो तो और बात है । इव पद के सम्बन्ध में भी इनका कथन भ्रान्त है । इव पद उपमा में प्रयोग होता है । इनका अर्थ सादृश्य होता है और वह आंशिक सादृश्य । उपमा में तुल्य का भी प्रयोग होता है परन्तु इव का अर्थ तुल्य नहीं होता है । 'ईषदर्थोपमोत्प्रेक्षा वाक्यभूषणयोरिव (गुणरत्नमहोदधि) से 'इव' पद ईषद् अर्थ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी प्रयुक्त होता है । 'इव' परिभयार्थे वा' थोडा सा मद अर्थ में भी प्रयुक्त होता है । अतः इस अनेकार्थक पद से कोई विशेष बात ही नहीं सिद्ध की जा सकती । उपमा अर्थ में यहां 'नाना' पद उपमान (अधिक वा उत्कृष्ट गुण वाला) तथा परमात्मा पद उपमित (न्यून गुण वाला) बनता है जो उपमासिद्धान्त के हीनत्व दोष (हीनत्वाधिकत्वलिङ्गवचनभेदासादृश्यासम्भवास्तः दोषाद्-का०सू०वृ० ४।२।८) के कारण उपमा का विषय नहीं बनता है ।

यदि 'एकस्योपमेयोपमानत्वेऽनन्वयः-का.सू.वृ. ४।३।१४ के 'गगनं गगनाकारं सागरं सागरोपमः । रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ॥ के अनुसार अनन्वय उपमा मानें तो यह नानात्व आत्मा या परमात्मा में सिद्ध होता है । अतः 'इव' पद की नैया पर उसका अद्वैतवाद पार उतरना असम्भव है । समीक्षकजी का यह कथन भी भ्रान्त है कि 'अतएव' एकत्वमनुपश्यत (य.सं ४०।७) यह श्रुति स्पष्ट एकत्व दर्शन का अनुमोदन करती है ।' इसवेद वाक्य में 'एकत्वं पश्यतः' वाक्य नहीं है प्रत्युत 'एकत्वमनु पश्यतः' वाक्य है । 'अनु' शब्द के अर्थ 'पश्चात् , सादृश्य, लक्षण, तत्व्याख्यान भाग वीप्सा और लम्बाई होते हैं-'अनु हीने सहार्थे च पश्चात्सादृश्ययोरपि । लक्षणेत्थम्भूताख्यान भागवीप्सा स्वनुक्रमे । आयामे च समीपे च मे. । तव एकत्वं के साथ 'अनुपश्यतः' के अन्वय से इसका जो विविध अर्थ होगा वह समीक्षकजी के अर्थ का घातक होगा । पुनः उपरोक्त वेद मन्त्र सम्पूर्णरूप से इसप्रकार है-'योस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः । तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनु पश्यतः ॥ शु. य. ४०।७॥' इस मन्त्र का आनन्दभाष्य इस प्रकार है-'यस्मिन्सर्वस्य ब्रह्मात्मकत्वानुसमये प्रणिधानकाले इति यावत्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वाणि भूतानि आत्मैव ब्रह्मैव अभूत् तस्मिन्समये सर्वभूत-शरीरकतया ब्रह्मण प्रतीतत्वात् कस्यैकं प्रतीतिरित्याशंकायामाह (विजानतः) विविच्य जानत ब्रह्म स्वतन्त्रम् अन्यत्सर्वं परतन्त्र-मिति विवेकेन ब्रह्मजानत. इत्यर्थः, तस्यैव ब्रह्माणि शरीरकत्वप्रती-तिरिति भावः । ननु स्वतन्त्रपरतन्त्रवस्तुभेद ज्ञाने कथमेवं प्रतीतिः घटते इत्यत्र आह (एकत्वमनुपश्यतः) एकत्वं जातिव्यक्त्योरित्र जगदूब्रह्मणोः विभागानर्ह सम्बन्ध विशेषं तदेव धार्यत्वादि रूपम् अनुपश्यतः विशदतया अनुसन्दधानस्येत्यर्थः, 'राम सुग्रीवयोरैक्यं दैव्यर्थं समजायत' इत्यादौ रामसुग्रीवयोरत्यन्तभेदेऽपि एकत्वस्य अविभाज्य सम्बन्ध रूपस्येव दर्शनात् इहापि तादृशैकत्वस्य ग्रहीतुं योग्यत्वात् तादृशश्च सम्बन्धस्य 'यस्यात्माशरीरम् यस्य पृथिवी शरीरमि'त्यादि श्रुति सिद्धत्वात् । तत्र एकत्वानुपन्धानकाले को मोहः शरीरादौ आत्मत्वभ्रमलक्षणः आत्मनि स्वतन्त्रत्व भ्रमलक्षणः पुत्रादौ ममत्वग्रहलक्षणो वा मोहः अविवेकः कः न कोऽपि मोहः तदा भवतीति भावः । तथा सर्वमेतत्परमात्मविभूतिरेवेत्येवं रूपेण ज्ञाते सर्व वस्तुनि कः शोकः शरीरनाशजन्यः पुत्रादि मरण जन्यः सर्वस्वापहरण प्रभवो वा शोकः कः नकोऽपि भवतीत्यर्थः । अहं ममेत्यादि भ्रम प्रसवत्वभावात् तन्मूलक मोहशोकादेस्तत्र नावसरो भवतीतिभावः, केचित् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूत् इत्यस्य आत्म व्यतिरिक्तानि सर्वाणि भूतानि न भवन्ति, एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति ज्ञाने ब्रह्मातिरिक्तस्य सर्वस्य मिथ्यात्वेन बाधितत्वात् रज्जौ रज्जुत्व ज्ञाने पूर्वं प्रतीतस्य सर्वस्य रज्जुव्यतिरिक्तत्वाभाववत् इत्यर्थं वर्णयन्ति तन्न युक्तम्-'य आत्मनि तिष्ठन् आत्मानमन्तरो नियमति यस्यात्मा शरीरम् यस्य पृथिवीशरमि'त्यादि श्रुतिसिद्धं जगद् ब्रह्मणोः शरीरात्मभावसम्बन्धमादाय सामानाधिकरण्यप्रतिपादन सम्भवे बाधार्या सामानाधिकरण्यमिति पक्षस्यानादेयत्वात् ॥' अतः समीक्षकजी को उपस्थापित उपरोक्त्त वेद मन्त्र का इससे बिपरीत अर्थ लगाना भ्रान्त सिद्ध होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[समीक्षक] जी का यह लिखना भी भ्रान्त है कि-'यदा-ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं कुरुते, अथ तस्य भयं भवति (तै.२। ७।१) जब कोई भी मनुष्य इस अद्वितीय विज्ञान घन ब्रह्मतत्त्व में थोडा भी भेद करता है, उसको भय होता है। यह श्रुति भेद दर्शन से भयकी प्राप्ति प्रतिपादन करती है, अर्थात् अभया र्थी को भेद दर्शन नहीं अभेद दर्शन करना चाहिए, यह सूचन करती है।' इस श्रुति में 'भेदं कुरुते' शब्द नहीं है, प्रत्युत 'अन्तरं कुरुते' वाक्य है। अन्तर शब्द के-'अन्तरमवकाशावधि परिधानान्तर्द्धिभेदतादर्थ्ये। छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्यात्म सट्ज्ञेषु ।मे०। अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये। छिद्रात्मी यविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च (अ. को ।।३।१८७-८८) ये पन्द्रह अर्थ होते हैं। यहाँ श्रुति का तात्पर्य किस अर्थ से है। अतः 'अन्तरं कुरुते' का तात्पर्य 'भादृशं कुरुते, छिद्रं कुरुते' आदि भी हो सकता है। भय की निवृत्ति अभेद दर्शन से नहीं होती। कहा जाता है कि शङ्कराचार्यजी बैठे अभेदवाद का प्रतिपादन कर रहे थे। वहाँ एक मतवाला हाथी आ रहा था। उसे देख कर शंकराचार्यजी प्राण भय से भागे। किसी श्रोता ने उन्हें भयभीत होकर भागते देखकर आश्चर्य से पूछा, भागे क्यों जा रहे हैं, गजोऽपि ब्रह्म (हाथी भी तो ब्रह्म ही है) शंकराचार्यजी ने भागते हुये ही कहा-'पलायनमपि ब्रह्म (भागना भी ब्रह्म ही है) परन्तु तब तो भयमपि ब्रह्म होगा। वस्तुतः भयकी निवृत्ति परमात्मा की कृपा से होती है-'सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम।' प्रभु शरण में जाने पर ही भयका निराकरण होता है। अहं ब्रह्मास्मि कहने से नहीं। इससे अहंकार ही होता है- ईश्वरोऽहं इत्यज्ञानविमोहिताः पतन्ति नरकेऽशुचौ-गीता।' आत्मा का परमात्मा के साथ आत्मा त्मीय सम्बन्ध (आत्मात्मीयत्व मुच्यते), रक्ष्य रक्षक सम्बन्ध।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रक्ष्य रक्षक भावश्च शेषशेषित्व सम्बन्ध (शेषशेषित्व सम्बन्धः) भोग्यभोक्तृत्व सम्बन्ध (शरीर शरीरी सम्बन्ध) आदि सम्बन्ध वैष्णव शास्त्र श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर से सिद्ध है, जिनके स्मरण एवं भावना से ही भय से छुटकारा मिलता है। अन्धेरी रात में एकान्त या श्मशान आदि का भय होने पर अहंब्रह्मास्मि न तो याद आता है और न कहने से कार्य ही चलता है, वहाँ तो श्रीहनुमान चालिसा की 'भूत पिशाच निकट नहीं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।' ही झटिति मुख से निकलने लगता है और भय से मुक्ति मिलती है। वही सहारा होता है। अयं आत्मा ब्रह्म कहने से काम नहीं चलता। समीक्षकजी का यह कथन भी सर्वथा भ्रान्त है कि-'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत (छा०) यह श्रुति सर्व को ब्रह्मरूप से एक अभिन्न निश्चय कराकर मुमुक्षु को रागद्वेष के अभाव द्वारा शान्ति समर्पण करती है। नाना के अनुसन्धान से राग और द्वेष होता है। यह लोक प्रसिद्ध है कि रागद्वेषवाला मनुष्य कैसे शान्त रह सकता है? तथा एकत्व के अनुसन्धान से रागद्वेष कैसे हो सकता है? नहीं हो सकता। तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यत (य. सं.) यह श्रुति एकत्व दर्शन से रागद्वेष रूपी मोह शोक का अभाव स्पष्टतः प्रतिपादित करती है। इसलिए नानात्व दर्शन से किसी को भी शान्ति नहीं मिलसकती।' परन्तु शान्ति तो 'भोक्तारं यज्ञ तपसां सर्वलोक महेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥गी॥' के अनुसार परमात्मा को सर्वलोक नहीं प्रत्युत सर्वलोकों का महेश्वर तथा सर्व प्राणी नहीं प्रत्युत सभी प्राणियों का सुहृत् ज्ञान से ही मिलती है नकि अपने को ही महेश्वर मानने से। यजुः संहिता का जो मन्त्र 'तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यत (४०।७) दिया गया है उसकी व्याख्या ऊपर की जाचुकी है। परन्तु समीक्षक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जी ने पुनः इस मन्त्र को उपस्थापित किया है। अतः इसके सम्बन्ध में पुनः कुछ कहना आवश्यक हो गया है। इसलिए इसके सम्बन्ध में यह ध्यान में रखना चाहिए कि उक्त यजुः संहिता का अन्तः निर्णयः रूप अन्तिम मन्त्र 'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम। में यजुः संहिता उपदेश का उपसंहार परमेश्वर को विश्वानि विद्वान् (सर्वज्ञ) होने एवं जीवों को जुहुराणमेनः (दुःखद पापयुक्त) होने तथा इस पाप से मुक्ति पाने के लिये युयोधि (विधि निमन्त्रणाऽधीष्टसम्प्रश्न प्रार्थनेषु लिङ्लोट् च) प्रार्थनैक उपाय होने इसलिये उसको सर्व भावेन नमस्कार करने अर्थात् शरण में जाने (भूयिष्ठां ते नम उक्तिंविधेम) में ही तात्पर्य है अतः श्रीआनन्दभाष्यकारजी ने 'अत्र चरममन्त्रद्वयेन सकलफलनिदानभूता शरणागतिः प्रतिपादिता भवति' लिखा है। जिसका दृष्टान्त-'नमोनमस्तेऽस्तु सहस्र कृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमोनमस्ते। नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व....तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादयेत्वामहमीशमीड्यम्। पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।' है। पुनः यजुः संहिता के आरम्भ में भी 'देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे निहारं च हरामि मे निहारं नि हराणि ते स्वाहा।३।५०।' में 'म' तथा 'ते' शब्दों में जीवात्मा परमात्मा में भेद तथा 'देहि' 'धेहि' लोट् लकार से परमात्मा का जीवात्मा पर अनुशासन प्रतिपादित है। अधिक क्या वेदों की माता गायत्री में भी 'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।' में 'तत्' पद तथा धीमहि क्रिया पद उत्तम पुरुष तथा तत् पद से परमात्मा तथा जीवात्मा में भेद तथा बहुवचनान्त 'नः' पद से जीवात्माओं के नानात्व का प्रतिपादन है। और क्या प्रायः सम्पूर्ण वेद परमात्मा की स्तुति का ही प्रतिपादन करते हैं अतः मन्त्रों की ऋचा है 'ऋचस्तुतौ' और प्रथम वेद का नाम ऋग्वेद है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इनमें सर्वत्र जीवात्मा का परमात्मा से भेद और तात्त्वम्य प्रतिपादित है। समीक्षकजी अपने उपस्थापित मन्त्र 'एकत्वमनुपश्यतः' के एकत्व पद पर बहुत नाज रखते है। इसकी समीक्षा की जा चुकी है। परन्तु पुनः उपस्थापित किये हैं। अतः इसकी पुनः समीक्षा की जा रही है। यहाँ 'एकमनुपश्यतः' नहीं है प्रत्युत 'एकत्वमनुपश्यतः' हैं। एकादि संख्या का प्रतिपादक होता है और एकत्वादि जाति या धर्मका जैसे सो और सोत्व। आत्मा और परमात्मा दो हैं परन्तु उनकी 'आत्मत्व' जाति या धर्म एक ही है अर्थात् उनके स्वरूप में अनेकत्व है और जाति में एकत्व। गीता में 'सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्व मास्थितः सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगिमयि वर्तते ॥६।३१॥ ज्ञान यज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ७।१५ में इसीलिये एकत्वेन (जातित्वेन) पृथक्त्वेन (विशेषत्वेन) दोनों प्रकार का ज्ञानयज्ञ प्रकार से उपासना प्रतिपादित है। समीक्षकजी द्वारा उपस्थापित इस यजुः संहिता में ही–'त्रितायत्वा द्वितायत्वैकतायत्वा ३।२३ चिताय त्रीन् स्वं जीवं प्रकृतिं चेति त्रीस्तनोति विस्तारयति स त्रितः परमेश्वरः। सृष्टिदशायां जीवेश्वर प्रकृतिश्च विस्तृता एव भवन्ति। यद्यपि परमेश्वरे न विस्तारोभवति। अव्ययान्निर्विकारत्वाच्च तस्य, तथापि स सृष्टि दशायां विस्तृत इव प्रतीयत। स्थूलचिदचिद्विशिष्टोभवति। मैं पर मेश्वर को चिद् अचित् ब्रह्म ये तीनों पृथक् तत्त्वों के रूप में, एवं 'अचित् चित्' वा 'चिदचिद् ईश्वर' इन दो रूपों में परमेश्वर को चित् और अचित् से पृथक् रूप में तथा स्थूलचिदचिद्विशिष्ट और सूक्ष्म चिदचिद्विशिष्ट परमेश्वर को अपृथक् (अविच्छेद्य) मानकर एक रूप में स्तुति की गयी है अतः उपस्थापित वाक्य 'एकत्वमनुपश्यतः' से कुछ अन्यथा नहीं सिद्ध की जा सकती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहाँ न तो 'एकं पश्यतः है न 'एकमनुपश्यतः' प्रत्युत 'एकत्वमनुपश्यतः' है। इसीप्रकार 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत' में पठित खलु शब्द का अर्थ-'खलुर्याद्वाक्यभूषायां जिज्ञासायाञ्च सान्त्वने। वीप्सासाधान निषेधेषु पूरणे पदवाक्योः।मे०। निषेध वाक्यालङ्कार जिज्ञासाऽनुनये खलु अ. को. ३।३।२५५ होने से अनेकार्थक हैं। अतः 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' का अनेक अर्थ हो सकते हैं। पुनः 'जल घातने घातनं तैक्ष्ण्यस्तीक्ष्णं भवनम्। तीक्ष्णं सामुद्रलवणे विषलोहाजिसुष्कके। क्लीबं जवाऽग्रे पुंसि तिग्मात्मत्यागिनो त्रिषु।मे०। विषाग्निमृतलोटेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु। अतः 'तज्जलानिति' का अर्थ 'तेजतीक्ष्णंभवन् सूक्ष्मी भवनमिति' सूक्ष्मचिदचिद्विष्टं भवनमिति' है। समीक्षकजी का यह प्रश्न कि 'एकत्व के अनुसन्धान से राग द्वेष कैसे हो सकता है? का उत्तर स्वयं उन्हीं में स्थित है और वह उनके इस पुस्तक के प्रथम श्लोक-'अद्वैतोक्ति पदन् वदन् स्वयमपि बालानमस्कुर्महे ये तु द्वन्द्ववदास्तदीय शिरसिन्यस्याम वासं पदम्। सिंह स्वीय शिशून्निवेश्य हृदये सान्द्रादरादाभृशत्यावेशेन भिनत्ति संभ्रमपदं मत्तेभकुम्भस्थलम्' में ही राग और द्वेष दोनों की पराकाष्ठा है। अतः उनके प्रश्न का उत्तर उनके ही मुख से हो जाता है कि जिस प्रकार आप को एकत्व के अनुसन्धान से राग द्वेष गया नहीं प्रत्युत उनकी अति वृद्धि हुई है क्योंकि आपने बडे घमण्ड से उसे सभों के सामने प्रदर्शित किया है, इसी प्रकार अन्यत्र भी सिद्ध है और आपने स्वयं प्रश्न कर स्वयं उत्तर भी कर दिया है कि-'नहीं हो सकता' वह आप के ही वाक्यों और आचरणों से खण्डित होकर असत्य सिद्ध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तृतीय प्रकरण पृ. ६–२०

[अद्वैत सिद्धान्त] वह शुद्ध अद्वितीय आत्मा निर्विशेष है, यानी जाति गुण क्रिया सम्बन्ध प्रभृति सकल सांसारिक विशेष धर्मों से प्रतीत है। अतएव वह ऐसा है या वैसा है यानी अमुक गुण वाला तथा अमुक धर्मवाला है, इसप्रकार नहीं कह सकते। माया विशिष्ट आत्मा तो सविशेष है, यानी सर्वज्ञत्व नित्यत्वव्यापित्वादि विशेषों से युक्त है। अतएव उसका शक्ति वृत्ति से प्रतिपादन हो सकता है। परन्तु शुद्ध निर्विशेष आत्मा शक्ति वृत्ति का विषय नहीं है।

[विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त] शुद्ध निर्विशेष आत्मा है ही नहीं आत्मा सविशेष ही है यानी वह सर्वज्ञत्वादि विशेष गुणवाला है अतएव सर्वज्ञ है नित्य है इत्यादि शब्दों से उसका प्रतिपादन हो सकता है।

[समीक्षा] 'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम (छा. ६।२।१) हे प्रियदर्शन ? यह दृश्यमान निखिल जगत् स्वोत्पत्ति से प्रथम एक एव अद्वितीय सद् ही था। यह श्रुति 'एक' पद से सजातीय भेद का 'एव पद से विजातीय भेदका तथा 'अद्वितीय' पद से स्वगत भेद का उस सत्तत्व में निषेध करती है। अतएव यह श्रुति निर्विशेष आत्म तत्त्व की प्रतिपादिका है।

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् (ए० १।१) ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् (बृ. १।४।१०) इन श्रुतियों के अनुरोध से वह सत् आत्मा ब्रह्म ही है। आत्मा से सत् ब्रह्म पृथक् नहीं है। 'सदेवेति' यह श्रुति सत् पद से अस्तिता मात्र वस्तु यानी जहाँ सामान्य की परिकाष्ठा है ऐसी निर्विशेष सन्मात्र वस्तु को कहती है। जगत् का मूल कारण यदि सविशेष माना जाये तो उसमें मूल कारणता का सम्भव नहीं हो सकता क्योंकि सभी विशेष सामान्य पूर्वक होते हैं सामान्य के बिना विशेष का कथन नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनता यह सर्वतन्त्र सिद्धान्त है। अतः मूल कारण को सविशेष नहीं मानसकते किन्तु निर्विशेष सामान्य सन्मात्र ही मानना चाहिए। उस सद्वस्तु को आप अस्तित्व स्वरूप धर्म से भी सविशेष नहीं कह सकते क्योंकि यदि उसे अस्तित्व से सविशेष माना जाये तो यह सविशेष किस सामान्य से निरूपित है। ऐसी आकांक्षा स्वतः उत्थित होती है जिस सामान्य से यह निरूपित होता है उस सामान्य को ही हम अस्ति शब्दाभिधेय सन्मात्र मूल कारण मानते हैं उस सामान्य को फिर आप अनवस्था से सविशेष नहीं मानसकते अतएव श्रुति घटक सच्छब्द का अर्थ निर्विशेष मात्र आत्मा ही है यह निर्विवाद पन्था है।

'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते (मु० १।१।५) यह श्रुति निर्विशेष ब्रह्म तत्त्व की प्रतिपादिका है। इस श्रुति में परा विद्या से प्राप्य तत्त्व का नाम अक्षर कहा है। 'नक्षरतीत्यक्षरम्' इस व्युत्पत्ति से अक्षर शब्द का अर्थ अविनाशी है। उस अक्षर शब्द का अविनाशित्व (विनाशाभाव) प्रवृत्ति निमित्त है अतः प्रथम से ही पराविद्या प्राप्य वस्तु का निषेध मुख से उल्लेख करने से श्रुति उस वस्तु को निर्विशेष सूचित करती है। वह पराविद्या प्राप्य वस्तु कैसी है? ऐसी जिज्ञासा होने पर श्रुति स्वयमेव उसका निषेध मुख से वर्णन करती हुई निर्विशेष तत्त्व का बडे जोडों से प्रतिपादन करती है—'यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रवर्णंचक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम्। नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः मु.१।१।६ यह पराविद्या प्राप्य वस्तु प्रत्यक्ष प्रमाण का अविषय तथा अनुमानादि प्रमाणों का अविषय एवं कर्मेन्द्रिय का भी अगोचर है। नाम से तथा नीलादि रूप से रहित है। ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय से भी रहित है। इसप्रकार दो पादों से निषेध मुख द्वारा प्राप्य वस्तु का प्रतिपादन किया। यद्यपि तृतीय पाद में नित्य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नित्यादिकों का वर्णन विधि मुख से है । ऐसा आपाततः भास मान होता है तथापि उनका पर्यवसान निषेध मुख से ही है । वही कहते हैं—नित्य यानी कालकृतपरिच्छेद का अभाव विभु यानी देशकृत परिच्छेद का अभाव एवं सर्वगत यानी वस्तुकृत परिच्छेद का अभाव इसप्रकार त्रिविध परिच्छेद रहित वस्तु का नित्य विभु एवं सर्वगत ये तीन पदों से बोध होता है । उस तत्त्व में विधि मुख से किसी भी धर्म का बोधन नहीं किया जाता है । दृश्यत्वादि विशेष धर्म न होने के कारण वह वस्तु ही न होगी ऐसी असत्त्व शंका होने पर श्रुति 'सुसूक्ष्मम्' ऐसा पद कहती है । वह वस्तु अतीव सूक्ष्म है यानी उसमें स्थूलत्व ही दृश्यत्व का प्रयोजक होता है । वह तत्त्व अनङ्ग अगुण एवं सर्वात्मा होने के कारण उसमें न्याङ्ग का अपचय (क्षय) रूप कोश (खजाना)' का अपचय के समान अपचय रूप तथा गुण द्वारा अपचय रूप व्यय नहीं है । वह भूतों का मूल यानी जगत्कारण है । यह वाक्य विधि मुख से प्रवृत्त है अतएव वह ऐसा सूचन करता है कि जगत्कारणत्वादि विशेष का आरोप करके सविशेष वस्तु (माया विशिष्ट ईश्वर) का ध्यान निर्विशेष शुद्ध ब्रह्म के साक्षात्कार का उपाय है । पूर्व के निषेध वाक्यों के पर्य्यालोचन से यह तात्पर्य निश्चित होता है कि जगत्कारणत्वादि विशेष रूप से जो वस्तु धीर लोग जानते हैं वह वस्तुगत्या निर्विशेष ही है । धीर नाम धैर्य वालों का है । सविशेष वस्तु के ध्यान द्वारा निर्विशेष वस्तु का साक्षात्कार क्रमशः हो जायेगा ऐसी दृढ बुद्धि का नाम ही यहां धैर्य है ।

और 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म (तै०२।१।१) यह श्रुति निर्विशेष वस्तु की प्रतिपादिका है । यहां भी मिथ्यात्व के अभाव का नाम सत्य है । जडत्व के अभाव का नाम ज्ञान है एवं त्रिविध परिच्छेद रूप अन्त के अभाव का नाम अनन्त है । तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च भावभूत पृथक् धर्म का आश्रय न होने के कारण वह ब्रह्म-तत्त्व सर्व धर्म विनिर्मुक्त निर्विशेष सिद्ध होता है। ब्रह्म शब्द भी निर्विशेषता का परिचायक है 'बृंहणात्सर्वव्यापनाद् ब्रह्म' सर्व में जो व्यापक है उसे ब्रह्म कहते हैं। यह नियम है कि सामान्य से ही विशेष व्याप्त होते हैं विशेष से सामान्य व्याप्त नहीं होता। यदि ब्रह्म के स्वरूप भूत बृहत्व को विशेष रूप माना जाय तो उस विशेष का निरूपण करनेवाला कोई सामान्य मानना होगा उस सामान्य के मानने पर वह सविशेष ब्रह्म से व्याप्त न होगा। ऐसा होने पर ब्रह्म में सर्व व्यापकता ही न रहेगी अतः बृहत्व को कदापि विशेष रूप नहीं मानसकते किन्तु उसे निर्विशेष ही मानना चाहिए।

और 'एकधैवानुद्रष्टव्यम (बृ. ४।४।१०) वह अनेकत्व का निषेध वाक्य तथा 'उदरमन्तरं कुरुते (तै०२।७।१) यह सकलभेद निषेधक वाक्य तथा 'केवलो निर्गुणश्च श्वे. ६।११ यह निखिल गुण निषेधक वाक्य तथा 'एकमेवाद्वितीयं (छां. ६।२।१) यह द्वितीय भाव का निषेध वाक्य भी निर्विशेष तत्त्व का बोधक है।

और गीता भी निर्विशेष ब्रह्म का प्रतिपादन करती है 'अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्माऽयमव्ययः' (गी०१३।३१) इस श्लोक में अनादित्व का अर्थ है मूल कारण का अभाव यानी जो सब का मूल है उसका मूल कोई नहीं। निर्गुणत्व यानी जिसमें सकलगुणों का अभाव है। 'असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च' (गी०१३।१५) वह ब्रह्म आसक्ति रहित और गुणों से अतीत हुआ अपनी योग माया द्वारा सबको धारण करनेवाला एवं गुणों का भोगने वाला प्रतीत होता है। 'विकाराश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवान्' (गी.१३।१९) हे अर्जुन! निखिल विकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और गुण प्रकृति से ही उत्पन्न हुये हैं ऐसा तू जान। इसी प्रकार विष्णु पुराण भी बडे जोरों से निर्विशेष ब्रह्म तत्त्व का प्रतिपादन करता है जैसे-'यत्तदव्यक्तमजरमचिन्त्यमजमव्ययम्। अनिर्देश्यमरूपं च पाणिपादाद्य संयुतम्।' विभुं सर्वगतं नित्यं भूतयोनिरकारणम्।' (वि०पु० ६।५।६६) जो तत्त्व अव्यक्त अजर अचिन्त्य अज अव्यय अनिर्देश्य अरूप एवं पाणिपादादि से शून्य है तथा जो व्यापक सर्वगत नित्य भूतों का आदि कारण तथा स्वयं कारण हीन है।

जगत्कारणत्व भी उसमें वास्तविक नहीं है क्योंकि जगत् मिथ्या है। अतएव कहा है-'विज्ञानं परमार्थो हि द्वैतमिथ्यात्व-दर्शिनः। वि० पु० २।१४।३१) द्वैत प्रपञ्च को मिथ्या रूपसे देखने वालों के लिये एक मात्र विज्ञान ही पदार्थ तत्त्व है।

प्रत्यस्तमितभेदं यत् सत्तामात्रमगोचरम। वचसामात्मसंवेद्यं तज्ज्ञानं ब्रह्मसंज्ञितम् ॥वि० पु०६।७।५३॥ जिसमें सम्पूर्ण सजातीयादि भेद शान्त हो जाते हैं जो सत्ता मात्र तथा वाणी का अविषय है तथा जो स्वयं ही अनुभव करने योग्य है वही ब्रह्म ज्ञान कहलाता है।

ज्ञानस्वरूपमत्यन्त निर्मलं परमार्थतः। तदेवार्थ स्वरूपेण भ्रान्तिदर्शनतः स्थितम् ।वि०पु० १।२।५१। जो परमार्थतः (वास्तव में) अति निर्मल (सकल उपाधि विनिर्मुक्त) ज्ञान स्वरूप है। किन्तु वह भ्रान्ति ज्ञान वश ज्ञातृज्ञेयादि नाना पदार्थ रूप से प्रतीत होता है। इस श्लोक में वह स्पष्ट कहा है कि वस्तुतः ब्रह्म ज्ञान स्वरूप है। उसमें जो अर्थ स्वरूप का यानी ज्ञान भिन्न ज्ञेय स्वरूप का तथा ज्ञातृस्वरूप का दर्शन है। वह अवास्तविक है भ्रान्तिजन्य है।

नोटः-इसके पश्चात् पृ०१६-२० में ब्रह्मसूत्र ३।२।११, ३।२।१६ एवं ३।२।१७ एवं इनके शाङ्कर भाष्यों को उद्धृत कर इनसे निर्विशेष सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[परीक्षा] समीक्षाकार ने 'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवा द्वितीयम् (छां० ६।२।१) उपस्थापित कर यह लिखा है कि 'यह श्रुति 'एक' पद से सजातीय भेद का 'एव' पद से विजातीय भेद का तथा 'अद्वितीय' पद से स्वगत भेद का उस सत्तत्व में निषेध करती है। अतएव यह श्रुति निर्विशेष आत्म तत्त्व की प्रतिपादिका है।' यह कथन सर्वथा भ्रान्त हैं। इसी श्रुति के अव्यवहित पर श्रुति है—'तद्वैक आहुरसदेवेदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम् ॥ तस्मादसतः सज्जायत।' इसमें भी 'एक' 'एव' एवं 'अद्वितीयम्' पद हैं। अतः समीक्षाकार के मत से इसीप्रकार उस असत्तत्व में भी निषेध होना है। पुनः तैत्तिरीयोपनिषद् के भी 'असद्वा इदमग्र आसीत्। ततो वै सदजायत। तदात्मानं स्वयम कुरुत तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते तद्वैवत्सुकृतम्। रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति ॥' इन श्रुतियों में उन दोनों छान्दोग्य श्रुतियों का समन्वय है। उपस्थापित 'सदेवसोम्येदमग्र।' श्रुति का अर्थ आचार्य चरण ने लिखा है—

'एक विज्ञानेन सर्वं विज्ञातं भवतीति पूर्वं प्रतिज्ञातं तां प्रतिज्ञां समर्थयितुं विभक्तनामरूपस्य बहुत्वावस्थस्य जगतो ब्रह्मैककारणतां प्रतिपादयितुमयमुक्रमः। यथेहलोके अपराह्णे प्रसारितानां घटशरावादीनां मृत्पिण्डैकोपादानतां प्रतिपादनेच्छोः पूर्वाह्णसमये एतत्घटशरावादिकं मृत्पिण्ड एवासीद् न पिण्डव्यतिरिक्तमन्यदासीदिति प्रतिपादयति। एवं जगदुत्पत्तेः पूर्वं सदेवासीत् न ततो व्यतिरिक्तं किंचनासीदिति प्रतिपादयति (सदेवेत्यादि)। हे सोम्य? श्वेतकेतो? इदं परिदृश्यमानं विभक्तनामरूपमनेकावस्थं घटपटादिजगत्, अग्रे सृष्टिकालात्पूर्वम् एकमेव अविभक्तनामरूपतया एकत्वावस्थापन्नमेव अद्वितीयं कर्तृत्वान्तरकारकरहितं सदेव सदाकारकप्रतीतिविषयतापन्नमेवासीत्। अत्र सच्छब्दः घटादिनामसम्बन्धयोग्यतालक्षणे सत्वं शक्यतावच्छेदकीकृत्याखण्ड ब्रह्माण्डनायके श्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मति रामे परमात्मनि वर्तते । यद्यपि अयं सच्छब्दः विशेष्यल क्षणपरमात्मबोधकः तथापि कारणविषयत्वसामर्थ्यात् कारणता प्रयोजक गुणविशिष्ट प्रकृतिपुरुष कालशरीरकं परमात्मानमेव समुपस्थापयति । अत्र सदेवेत्येवकारेण नेयायिकमतं व्यवच्छिनत्ति । ते हि कार्योत्पत्तेः पूर्वं कार्यस्य घटादेरसत्त्वमेवेच्छन्ति, न तु सत्त्वम् विद्यमानस्योत्पत्त्ययोगात् । उत्पत्तेः पूर्वमविद्यमानं जगत्कारणव्यापाराद नन्तरं जायते यदि सदेव स्यात्तदाकारकव्यापारोऽनर्थक एव भवेत् । तन्मतं निराकृतं भवति प्रकृतेर्नैवकारेण एतत्तत्वम् असदेवेदमग्रे आसीदित्यसत्कार्यवादि दर्शन प्रतिक्षेपपरकोत्तरवाक्यप्रकरणान्निर्णीयते । एकमेवाद्वित्यैवकारेण । बहुस्यामित्यादिना वक्ष्यमाणायो सृज्यमानानां बहुत्वावस्था निराक्रियते । एवं तदैक्षत तत्तेजोसृजत इत्यादिप्रकरणे सच्छब्दवाच्यस्य निमित्तकारणता प्रतिपादनेन । अद्वितीयमिति पदेन निमित्तान्तरस्य निषेधः क्रियते यथा घटादिकार्यं उपादानं मृत्तिकाकर्तृकारणं कुलालादिकं मृद्भिन्नम् । न तथा प्रकृते उपादानमन्यत् निमित्तकारणं तु अन्यद् । इति निमित्तान्तरस्य निराकरणं भवति । ततश्च एकमद्वितीयमिति पदाभ्यामभिन्ननिमित्तोपादानकत्वं सिद्ध्यति तदयं निर्गलितोर्थः । इदं प्रत्यक्षादिप्रमाणेन परिदृश्यमानं जगद् विभक्तनामरूपं बहुत्वावस्थम् सृष्टेः पूर्वनिमित्तान्तररहितम् अविभक्तनामरूपतया एकं सच्छब्दशब्दितं ब्रह्मलक्षणमेवाभवदिति । यद्यपि जगद् इदानीमपि सदेव पूर्वमपि सदेव तथापि सृष्टेरनन्तरं विभक्तनामरूपतयासत् उत्पत्तेः पूर्वन्तु अविभक्तनामरूपतया सत्त्वम् । एतावानेव विशेषः । ये तु एकमेवाद्वितीयमिति वेदवाक्यं जगतो मिथ्यात्वे प्रमापयन्ति ते भ्रान्ताः यतो यदि एकमेवेत्यादिवाक्यं मिथ्यात्वमवबोधयेत्तदा सदेव सोम्येदमग्रे आसीदिति वाक्यघटककालप्रापकाप्रपदेन तथा तदैक्षतनामरूपे व्याकरवाणि इति ईक्षण नामरूपप्रतिपादकोत्तरवाक्येन विरोधप्रसङ्गादिति ।' एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्रे सृष्टेः प्राक्काल इदं नामरूपवत्तया दृश्यमानं स्थूलचिद चिच्छरीरकं ब्रह्म असद् नामरूपविभागरहितचिदचिच्छरीरकमासीत्। नामरूपराहित्येनादृश्यमानत्वादसच्छब्देन व्यपदेशः। ततः सृष्ट्यनन्तरं सूक्ष्मचिदचिद्विशिष्टं ब्रह्मैव स्थूलचिदचिद्विशिष्टतया सद्रूपमजायत अभवत्। दृश्यमानतया तत्रैव सच्छब्देन व्यपदेशः। तत्कथं सदभवदित्यत्राह तदात्मानमिति। तत् सूक्ष्मचिदचिद्विशिष्टं ब्रह्म आत्मानं स्वमेव स्वयमकुरुत स्वात्मानमेवोपादानं कृत्वा स्वयमेव निमित्तं भूत्वा स्थूलचिदचिच्छरीरकं ब्रह्माभवत्। एतेन ब्रह्मण एव जगत् प्रत्युपादानत्वं निमित्तत्वचोक्तं भवति। अत एव ब्रह्मैवाभिन्ननिमित्तोपादानतया तत्र तत्र वर्ण्यते। तस्माद् यस्मात् कारणात् ब्रह्म स्वयमेव स्वकार्ये भवति तस्मादेव। हेतोः तद् ब्रह्म सुकृतं सुष्ठुकृतं यस्य तादृशमुच्यते। श्रुतिभिरितिशेषः। श्रुतयश्च निःश्वसितमेतन् महतोभूतस्येत्यादयः। निःश्वसितशब्देन निःश्वासकरणे यथा न प्रयत्नरूपः क्लेशः तथा क्लेशं विना लीलान्यायेनैव ब्रह्म सर्वं करुत इति लभ्यते। स एव चार्थः सुकृतशब्द व्यङ्ग्यः। क्लेशं विनैव जगत्सर्गो ब्रह्मकृत इति। जगतः स्वात्मकार्यत्वात्। इति शब्दामन्त्रसमाप्तिं द्योतयति।

यद् ब्रह्म सुकृतमित्युच्यते श्रुतिभिः तद् ब्रह्म रसोऽनवधिकानन्दरूपः। वै शब्दोऽस्यार्थस्य सुकृतशब्देन कथितस्य ब्रह्मणो रसस्वरूपतात्मकस्यावधारणं बोधयति। रसं रसस्वरूपं परमात्मानं लब्ध्वा प्राप्यायं जीव उपासक आनन्दीभवति आनन्दयुक्तो भवति। हि शब्दो निश्चये। एतेनानन्दमयस्य श्रीरामस्यानन्दयितृत्वकथनादुपासनीयता प्राप्यता चोक्ता भवति।'

अतः यह कहना सर्वथा भ्रान्त है कि यह श्रुति निर्विशेष तत्त्व की प्रतिपादिका है। यह भी कथन सर्वथा भ्रान्त है कि यह श्रुति एक पद से सजातीय भेद का 'एव' पद से विजातीय भेद का तथा अद्वितीय पद से स्वगत भेद का उस सत्तत्व में निषेध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करती है क्योंकि जैसे इन पदों का अन्वय 'सदेव०' में सत् के साथ है वैसे ही अन्वय वहीं उसके पर श्रुति में 'असदेव०' में असत् के साथ भी है। अतः वहाँ इनका दोनों के साथ होने से समीक्षकजी का कथन भ्रान्त सिद्ध है। कारण और कार्य में अभेद होता है अव्यक्त कार्य कारण होता है और व्यक्त कारण कार्य होता है। कार्य कारण में छुपा रहता है तब कारण कहलाता है और जब कारण कार्य रूप में प्रकट होता है तब कार्य कहलाता है। सत्कार्यवाद अकाट्य सिद्धान्त है। कार्य कारण ही की अवस्था मात्र है। ब्र.सू.२।१।१६ के भाष्य में शङ्कराचार्यजी ने स्वीकार किया है–'यथा च कारणं ब्रह्म त्रिषु कालेषु सत्त्वं न व्यभिचरति एवं कार्यमपि जगत् त्रिषु कालेषु सत्त्वं न व्यभिचरति।' अर्थात्–जिस प्रकार कारण रूपी ब्रह्म की सत्ता त्रिकालों में रहती है उसी प्रकार कार्य रूप जगत भी त्रिकालों में अपनी सत्ता को नहीं छोड़ती हैं। 'कारण गुण पूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः वै. सू. २।१।२४। 'नाऽसतो विद्यते भावः नाऽभावो विद्यते सतः गी०॥' परन्तु जिसप्रकार सत्कार्यवाद (सांख्य प्रभृति) कारण में कार्य को सत मानते हैं उसीप्रकार असत् कार्यवादी (न्याय प्रभृति) कारण में कार्य को असत मानते हैं। इन दोनों मतो का मूल और समन्वय उपरोक्त छान्दोग्य श्रुति 'सदेव०' एवं 'असदेव' वाक्यों में है। शङ्कराचार्यजी ने जो ऊपर कारण ब्रह्म कहा है और जिसे विशिष्टाद्वैतवादी सूक्ष्म चिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म कहते हैं उसीको उक्त 'सदेव०' श्रुति वाक्य द्वारा कहा गया है तथा जिसे शङ्कराचार्यजी ने कार्य ब्रह्म और विशिष्टाद्वैतवादी स्थूल चिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म कहते हैं उसो को उक्त 'असदेव०' श्रुति वाक्य द्वारा कहा गया है और इन दोनों में अभेद ज्ञापन के लिये दोनों के साथ 'एकम्' और 'अद्वितीयम्' पदों का प्रयोग किया है। दोनों में शरीर शरीरीभावेन एकत्व है। जैसे देवदत्त अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्मा-मन-शरीर संयुक्त मूर्ति एक है परन्तु उसकी आत्मा मन शरीर में स्वगत भेद है इसीप्रकार उसकी आत्मा का परमात्मा से सजातीय भेद है तथा जड पदार्थों से विजातीय भेद है उसी प्रकार परमात्मा का भी अपने चिदचिद्विशिष्ट शरीरत्वेन स्वगत भेद आत्मा से सजातीय भेद तथा अचित् से विजातीय भेद है श्रुति में प्रयुक्त एक पद उसके सजातीय भेद के व्यावर्तन के लिये नहीं प्रत्युत सजातीयों से और अपनी विशेषता निरूपण के लिये है उसका सजातीय आत्मा अनेक है परन्तु परमात्मा एक ही है। इसीप्रकार 'अद्वितीय' पद स्वगत भेद के व्यावर्तन के लिये नहीं प्रत्युत स्व की सर्वोत्कृष्टता प्रतिपादन के लिये है। तथा 'एव' पद उसका विजातीय भेद के व्यावर्तन के लिये नहीं प्रत्युत विजातीयों से भेद प्रतिपादन के लिये प्रयुक्त है।

समीक्षकजी का यह कथन भी भ्रान्त है कि 'आत्मा वा इदमग्र आसीत् (ऐ०' ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् (बृ) इन श्रुतियों के अनुरोध से वह सत् आत्मा ब्रह्म ही है। आत्मा से सद्ब्रह्म पृथक् नहीं है। इसके साथ पठित 'वा' पद (स्याद् विकल्पो पमयोर्वितर्के पाद पूरणे। समुच्चये च विस्मभे नानार्थातीत योरपि।) अनेकार्थक है पुनः एक में आत्मा पद पठित है जो जीवात्मा या परमात्मा का बोधक है तथा दूसरे में ब्रह्म पद पठित है जो केवल परमात्मा का बोधक है जीवात्मा का नहीं। पुनः दोनों भिन्न उपनिषदों के वाक्य हैं। अतः इनमे प्रथम का अर्थ है कि प्रथम परमात्मा (सूक्ष्मचिदचिद्विशिष्ट) था और दूसरे का अर्थ है कि प्रथम ब्रह्म (स्थूलचिदचिद्विशिष्ट) था प्रथम अवस्था में चिदचिद् उसमें प्रविष्ट हो जाते हैं और मात्र परमात्मा ही रहता है तथा दूसरी अवस्था में चिदचिद् उसमें से प्रकट हो जाते हैं और यह स्थूलचिदचिद्विशिष्ट बृहत ब्रह्म है। सत् आत्मा है सत् ब्रह्म है के स्थान पर आत्मा सत् है ब्रह्मसत् है कहना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही श्रुतियों का तात्पर्य है। समीक्षकजी का यह कथन भी सर्वथा भ्रान्त है कि 'आत्मा से सत् ब्रह्म पृथक् नहीं है। 'सदेवेति' यह श्रुति सत्पद से अस्तितामात्र वस्तु यानी जहाँ सामान्य की पराकाष्ठा है ऐसी निर्विशेष सन्मात्र वस्तु को कहती है।' क्योंकि जलमग्न घट जल से अपृथक् रहते हुये भी जल से भिन्न वस्तु है। उसीप्रकार आत्मा भी परमात्मा से अपृथक् रहते हुये भी परमात्मा से भिन्न वस्तु है। सत् व्यापक धर्म है वह ब्रह्म से अतिरिक्त जड (अचित्) एवं चेतन (चित) में भी व्यापक है। 'सदेवेति' श्रुति सत् पद से अस्तितामात्र नहीं प्रत्युत सत् का प्रतियोगि ब्रह्म आत्मा पदार्थ (पदार्थानामस्तित्वाभिधेयत्वाज्ञेयत्वानि-प. ध. सं.) का भी प्रतिपादन है। यदि श्रुतिको अस्तितामात्र अभीष्ट रहता तो वहाँ आत्मा और ब्रह्म शब्द नही रहता। पुनः सामान्य की पराकाष्ठा को निर्विशेष कहना और भी भ्रान्त है। सामान्य की पराकाष्ठा पर सामान्य (सत्ता परतयोच्यते—भा. प.) है और यह सभी सामान्यों से भिन्न है। इसीप्रकार अपर सामान्य (परभिन्नातु या जातिः सैवापरतयोच्यते भा प.) पर सामान्य अपर सामान्य से भिन्न है। अतः अपर सामान्य परापर सामान्य से भिन्न होने से ये पर सामान्य और अपर सामान्य व्यावर्तक और विशेष हैं। कणाद ने कहा है—'सामान्य विशेष इति बुद्ध्यपेक्षम्—१।२।३।' इसीप्रकार विशेष की परिभाषा है 'अत्यन्त व्यावृत्तिहेतुर्विशेषः।' सत्ता मामान्य असत् का व्यावर्तक होता है। समीक्षकजी का यह कथन भी भ्रान्त है कि 'जगत् का मूलकारण यदि सविशेष माना जाये तो उसमें मूलकारणता का सम्भव नही हो सकता क्योंकि विशेष सामान्य पूर्वक होते हैं। सामान्य के बिना विशेष का कथन नहीं बनता यह सर्वतन्त्र सिद्धान्त है। अतः मूलकारण को सविशेष नहीं मान सकते किन्तु निर्विशेष सामान्य सन्मात्र ही मानना चाहिए।' विशेष सामान्य पूर्वक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ आनन्दभाष्यसिंहासनासीन ॥

॥ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य और रामानन्दवेदान्त ॥

ले० स्वामी सीतारामाचार्य

(१) जन्मस्थल पूर्व नेपाल

(२) त्रिप्रवरान्वित शुक्ल यजुर्वेदीय वाजशनेय शाखाध्यायी वशिष्ठ गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।

(३) वैशाख शुक्ल तृतीया १९८८ वि. सं. में जन्म

(४) २००० वि. में प्रथम वार गृहत्याग माघ स्नान काशी आदि में भ्रमण ।

(५) २००७ वि. में नेपाल राष्ट्र के राष्ट्रिय उथल पुथल में सक्रिय कार्य कर एवं पीडित जनता की सेवा ।

(६) २००८ कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा को सर्वतोभाव से गृहत्याग

(७) सिक्किम भुटान आसाम आदि प्रदेशों का पर्यटन कर बद्रीनारायण आदि तीर्थों का सम्पादन कर ऋषिकेश में १९५३।५४ में निवास

(८) जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ श्रीशेषमठ सञ्चालित श्रीरघुवर संस्कृत महाविद्यालय में विशेष अध्ययनार्थ दि. १७-१९५४ को प्रवेश ।

(९) अक्षय तृतीया दि. १०-५-१९५६ गुरुवार को जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी से श्रीरामानन्दीय विरक्त दीक्षा प्रणाली के अनुसार शास्त्रीय विधानानुसार विरक्त दीक्षा ग्रहण ।

(१०) ऋषिकेश आचार्यपीठ वृन्दावन अयोध्या वाराणसी आदि विविध स्थानों में विविध शास्त्रों का अध्ययन ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(११) आचार्यपीठ के नियमानुसार उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त दिनाङ्क ११-४-१९७३ ।

(१२) जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ विश्राम्बद्वारका में वसन्त पञ्चमी बुधवार दि. ३१-१-१९९० को श्रीसम्प्रदायीय श्रीरामानन्दसम्प्रदायीय नियमानुसार त्रिदण्डग्रहण । उसी दिन समाज द्वारा आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के रूप में सार्वभौमिक रूप से घोषणा ।

(१३) समाज सेवा में विशेष अभिरुचि विशेषतः साहित्यिक श्रीरामानन्द दर्शन क्षेत्र में अभिरुचि ।

(१४) जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ मासिक पत्रिका का सम्पादन एवं प्रसारण कर श्रौत विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त पोषक श्रीरामानन्द वेदान्त दर्शन का वृहद् प्रचार प्रसार ।

(१५) महर्षि श्रीबोधायनानुमोदित आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी से विशेष रूप से प्रचारित एवं प्रसारित श्रौत विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त संरक्षण हेतु आज तक १५५ विविध भाषा में तात्विक पुस्तकें लिखे हैं । उनमें से १०२ प्रकाशित होकर समाज सेवा में निरत हैं । शेष यन्त्रस्थ हैं । २५ बुद्धिस्थ हैं ।

(१६) आपके मुख्यवादग्रन्थ श्रुतितात्पर्यबिन्दु श्रीवैष्णव मताब्जभास्कर में प्रभाटीका तथा तत्त्वत्रय सिद्धि में तत्त्वदीप वेदार्थचन्द्रिका में प्रकाश प्रस्थानत्रय भाष्यों में प्रकाश श्रीवैष्णव सन्यास मीमांसा एवं जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यः तथा श्रीरघुवर विजयम् गद्य महाकाव्य हैं ।

(१७) समय समय पर सम्प्रदाय के ऊपर अन्यों द्वारा किये गये आक्षेपों का सचोट निराकरण आपकी प्रकृतिकी देन है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१९५४ में आप जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ श्रीशैलमठ शींगडा में अध्ययनार्थ पधारे १९५५ में नासिक का कुम्भ पर्व था वहां से कुम्भ पर्व के समाप्ति के बाद जगद्गुरु श्रीजानकी दासजी श्रीहनुमान गढी वाले आचार्यपीठ में पधारे थे आपको वार्ता प्रसंग में उन्हों ने विशिष्टाद्वैत के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। तब आप पूर्वमध्यमा के छात्र थे। आपके जिज्ञासा करने पर गीतार्थ संग्रह का नाम लिये। क्योंकि उन्होंने आप श्री को गीता पाठ करते देख लिये थे। आप श्री ने विनम्र जिज्ञासा व्यक्तकी कि क्या श्रीरामानन्दसम्प्रदाय में ऐसी कोई पुस्तक नहीं! उत्तर था गीता अभी प्रकाशित नहीं हो पायी। गीतार्थ संग्रह भी अभी अप्रकाशित है। श्रीयुत् महामहोपाध्याय जी से प्रसादित विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तसार है जो अबु से प्रकाशित हुई है। उसे देखे यथा बुद्धि अध्ययन भी किये जिज्ञासा बढी। १९५७ में पण्डित सम्राट् स्वामी श्रीश्रीवैष्णवाचार्यजी आचार्यपीठ पधारे थे आनन्दभवन में उनका आसन लगाया गया था। सातेक दिन आप वहां रुके। दिन में पीठ के अन्य कार्यों में बहुत ही व्यावृत्त होने के कारण दिवस में समयाभाव होने से रात्री में पण्डित सम्राट्जी से शास्त्रीय एवं साम्प्रदायिक कुछ चर्चायें हुआ करती थी। यह जानकर आप श्री को महान् क्लेश हुआ कि श्रीरामानन्दवेदान्त की परीक्षा किसी सरकारी या अर्ध सरकारी संस्थाओं से नहीं होती है। बात आयी गई होगयी। बहुत दिनों के अन्तराल के बाद बृहद्गुजरात संस्कृत परिषद् अहमदाबाद में श्रीरामानन्दवेदान्त की परीक्षाएं नियतकराये। अनन्तर १९६६ से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी में श्रीरामानन्द वेदान्त की शास्त्री एवं आचार्य कक्षा नियतरूप से चलने तथा परीक्षाएं लीजाने लगी एवं सं. सं. वि. वि. वाराणसी से सम्बद्ध अनेक महाविद्यालय में इसकी कक्षायें नियत रूप से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चलने लगी एवं अनेक छात्र शास्त्री एवं आचार्य कक्षा में सफल होकर भिन्न भिन्न संस्थाओं में सरकारी अर्धसरकारी या प्राईवेट संस्थाओं में कार्य रत हुये। जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ अहमदाबाद का प्रधान अंगभूत श्रीरघुवर रामानन्दवेदान्त महाविद्यालय अहमदाबाद से श्रीरामानन्द वेदान्त के शास्त्री एवं आचार्य कक्षाओं में अनेक छात्र नियत रूप से सम्मिलित होते आरहे हैं। परीक्षाओं में सफल छात्र सरकारी अर्धसरकारी विविध संस्थाओं में कार्य रत हैं।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से सञ्चालयमान विविध विषयों के परीक्षाओं में श्रीरामानन्दवेदान्त ने १९९० से अपना गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया तब से विविध कक्षाओं में जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ सञ्चालित श्रीरघुवर रामानन्दवेदान्त महाविद्यालय से अनेक छात्र सम्मिलित होते आरहे हैं १९९२ में

(१) अयोध्या प्रसाद त्रिपाठी	आचार्य	प्रथम	श्रेणी
(२) विद्यानाथ झा	आचार्य	प्रथम	श्रेणी
(३) नन्दकिशोर मेहता	आचार्य	प्रथम	श्रेणी
(४) श्रीरामाचार्य	आचार्य	द्वितीय	श्रेणी

१९९३ में

(१) नन्दलाल जोशी	आचार्य	प्रथम	श्रेणी
(२) अरविन्द कुमार ठाकुर	शास्त्री	द्वितीय	श्रेणी
(३) अजय पाण्डेय	शास्त्री	द्वितीय	श्रेणी
(४) श्रीसीतारामाचार्य	शास्त्री	द्वितीय	श्रेणी
(५) विष्णु प्रसाद भट्टराई	शास्त्री	द्वितीय	श्रेणी
(६) पद्मराज जोशी	शास्त्री	द्वितीय	श्रेणी

१९९५ में शास्त्री वर्ष ३ में तीन छात्र एवं आचार्य २ में ३ छात्र सम्मिलित हुये थे जिनका परिणाम अभी प्राप्त नहीं हुये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष में :– आचार्य प्रथम वर्ष में श्रीरामानन्दवेदान्त विषय से **श्रीसीतारामाचार्यजी** ने कूल गुणाङ्क ५०० में ३५३ अंक प्राप्तकर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से १९९५ वर्ष में लीगयी आचार्य प्रथम वर्ष की परीक्षाओं में **चौथा स्थान** प्राप्तकर इस महाविद्यालय का गौरव बढाया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

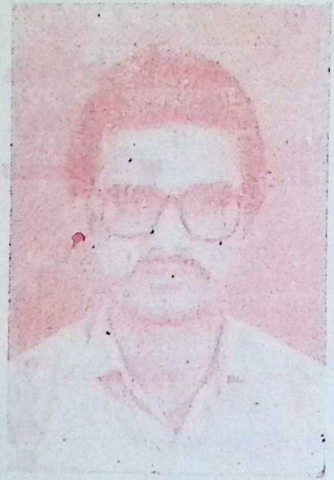

ψ ψ ψ

आचार्य प्रथम वर्ष में रामानन्द वेदान्त विषय से श्रीअभयकान्त मिश्र ने कूल गुणांक ५०० में ३४८ अंक प्राप्तकर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से १९९५ वें वर्ष मे ली गई परीक्षाओं में छट्ठा स्थान प्राप्तकर इस महा विद्यालय का गौरव बढाया है ।

ψ ψ ψ

आचार्य प्रथम वर्ष में श्रीरामानन्दवेदान्त विषय से रमेश चतुर्वेदी ने सन् १९९५ वें वर्ष में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से ली जाने वाली परीक्षाओं में कूल गुणाङ्क ५०० में ३४७ अंक प्राप्तकर सातवाँ स्थान प्राप्तकर इस महाविद्यालय का गौरव बढाया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से लीजाने वाली श्रीरामानन्दवेदान्त का पाठ्यक्रम निम्न रूप से है-

शास्त्री वर्ष १ पत्र ५

(क) प्रमेयपरीशोधिनी ले.पण्डित सम्राट् स्वामीवैष्णवाचार्यजी ५०

(ख) ज्ञानरत्नावली ले. पण्डित सम्राट् स्वामी वैष्णवाचार्यजी ५०

पत्र ६ ईशकेनकठ प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य तैतिरीयोपनिषदानन्द भाष्यम् १००

शास्त्री-२ पत्र ५

गीतानन्दभाष्यस्य १-७ अध्यायाः १००

६ ब्रह्मसूत्रानन्दभाष्यस्य प्रथमाध्यायः १००

शास्त्री-३ पत्र ५

वेदार्थ चन्द्रका ले. श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी १००

६-गीतार्थ चन्द्रिका के ८-१८ अध्याय

ले० महामहोपाध्याय ज.गु. श्रीरघुवराचार्यजी १००

आचार्य १-पत्र १

(क) छान्दोग्योपनिषद् आनन्दभाष्य के ५ से ८ अध्याय ६०

(ख) श्रौत प्रमेय संग्रहः ४०

पत्र २ (क) बृहदारण्यकोपनिषद् आनन्दभाष्य के १-२ अध्याय ६०

(ख) वेद रहस्यम् ४०

पत्र ३ (क) श्रुतितात्पर्यबिन्दुः ले० ज. गु. श्रीरामानन्दाचार्य स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्यजी ६०

(ख) श्रीरघुवीरवृत्ति का १ अध्याय ४०

पत्र ४ अध्यात्मबन्धलेश १००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आचार्य वर्ष २ पत्र १

ब्रह्मसूत्र आनन्दभाष्य के २, ३, ४ अध्याय १००

पत्र २ तत्त्वत्रयसिद्धिः ज. गु. श्रीरामप्रपन्नाचार्य कृत १००

पत्र ३ (क) प्रभा सहित श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर ७०

(ख) श्रीमन्त्रराज श्रीमांसा महामहोपाध्याय जगद् गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीध्रुवराचार्य कृत ३०

पत्र ४ (क) श्वेताश्वतरोपनिषद् का आनन्दभाष्य ६०

(ख) श्रीभगवन्नाम कौमुदी ४०

प्रश्न ५ (क) स्वशास्त्रीय निबन्ध ५०

सहायक ग्रन्थ

(१) श्रीबोधायन मतादर्श

(२) श्रीभगवद्गुणदर्पणम्

(३) श्रीरामतत्त्वभास्कर

(ख) स्वशास्त्रीय इतिहास ५०

सहायक ग्रन्थ

(१) देशिक परिचर्या

ज.गु. स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य कृत

(२) प्राचार्य विजय ध्वजः

ले० पण्डित सम्राट् स्वामी श्रीवैष्णवाचार्य

(३) जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

के. ज.गु. स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से ली जाने वाली श्रीरामानन्दवेदान्त का पाठ्यक्रम निम्नानुसार है—

शास्त्री वर्ष १ पत्र ४ वेदान्त परिभाषा १००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्र ५ ईशकेनकठ प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य

तैतिरीय ऐतरेय उपनिषदों के आनन्दभाष्य १००

पत्र ६ (क) प्रमेय परिशोधनी

ले. पण्डित सम्राट् स्वामी श्रीवैष्णवाचार्य ५०

(ख) मानरत्नावली पण्डित सम्राट् श्रीवैष्णवाचार्यजी ५०

शास्त्री वर्ष २ पत्र ४

(क) ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य का प्रथम अध्याय ७०

(ख) ब्रह्मसूत्र आनन्दभाष्य का प्रथमाध्याय प्रथम पाद ३०

पत्र ५ ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य का दूसरा एवं चौथा अध्याय १००

पत्र ६ गीता का आनन्दभाष्य १००

शास्त्री वर्ष ३ पत्र १

(क) छान्दोग्योपनिषद् के आनन्दभाष्य का ५ से ८ अध्याय ७०

(ख) भगवद्गुणदर्पणम् श्रीमधुराचार्य कृतम् ३०

पत्र २ (क) बृहदारण्यकोपनिषद् के आनन्दभाष्य का १–१ अध्याय ७०

(ख) श्रौत प्रमेयचन्द्रिका श्रीप्रियानन्दाचार्य कृत ३०

पत्र ३ श्रीरामतापनीयोपनिषद् का प्रथमोपनिषद् हरिदासीय भाष्य सहित १००

पत्र ४ भक्तिरसार्णव श्रीहरिहरानन्द सरस्वतीकृत १००

आचार्य वर्ष १ पत्र १

वेदार्थचन्द्रिका ज.गु. श्रीरामप्रपन्नाचार्य कृत १००

पत्र २ अध्याशध्वंशलेश १००

पत्र ३ (क) श्वेताश्वतरोपनिषदानन्दभाष्यम् ५०

(ख) रामानन्दवेदान्तादर्श डा. नरेन्द्रनाथ पाण्डेय ५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्र ४ (क) श्रीरघुवरीयवृत्ति : ५०
(ख) वेदरहस्यम् ५०
आचार्य वर्ष २ पत्र १ ब्रह्मसूत्रानन्दभाष्य प्रथमाध्याय
द्वितीयपादतः समाप्त्यन्तोभाग : १००
पत्र २ (क) मन्त्रराजमीमांसा ५०
(ख) श्रीवैष्णवमतार्कभास्करः ५०
पत्र ३ तत्त्वत्रयसिद्धिः ज.गु. श्रीरामप्रपन्नाचार्यकृत १००
पत्र ४ (क) स्वशास्त्रीय निबन्ध : ५०
सहायकग्रन्थाः
(१) अर्थपञ्चकम् ले० पण्डित सम्राट स्वामीश्रीवैष्णवाचार्य
(२) श्रीरामतत्त्वभास्करः—रामतत्त्वभास्करः
(३) अधिकरण रत्नमाला पण्डित सम्राट स्वामी श्रीवैष्णवाचार्यकृत
(४) ब्रह्मसूत्रार्थसंग्रहः पण्डित सम्राट स्वाम श्रीवैष्णवाचार्य कृत
(५) रामानन्दसिद्धान्तसारः पण्डित सम्राटजी
(६) श्रीवोधायनमतादर्श ज.गु. श्रीपूर्णानन्दाचार्यकृत
(ख) स्वशास्त्रीयेतिहासः ५०
सहायक ग्रन्थो १ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यः
ज.गु. स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यकृतः
(२) देशिक परिचर्या ज.गु. श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यकृता
पत्र ५ मौखिक परीक्षा १००

॥ श्रीवैष्णवीय संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न ॥

ले० श्रीपूनमभाई वैष्णव

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ श्रीझोपमठ विश्रामद्वारका पोरबन्दर (सौराष्ट्र) में श्रीवैष्णवीय संस्कार शीविर ता. ३।१०।९५ को सविधि सम्पन्न हुआ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी श्री श्री १०८ श्रीमयेश्वरानन्दाचार्यजी महाराज अहमदाबाद द्वारा आयोजित श्रीवैष्णवीय संस्कार शिविर आचार्यपीठ श्रीरोषमठ शींगडा में ता० २५।९।९५ को प्रारम्भ होकर ता० ३।१०।९५ को सविधि सम्पन्न हुआ। वैष्णवों के लिए सर्व आयोजित यह प्रथम शिविर आचार्य श्री का अहमदाबाद एवं उनके पार्षदों सहित पदार्पण के साथ ही शींगडा में २५।९।९५ को प्रातः से ही शुभारम्भ हो गया। प्रतिपदा से विजयादशमी तक आयोध्य श्रीरामपारायण कथा का शुभारम्भ भी उसी दिन से हो गया था। कथा के व्यास पीठ पर आचार्य श्री के शिष्य रत्न श्रीहरिप्रसादाचार्यजी विराजमान होकर नौ दिन तक अपनी सुमधुर शैली में सबको सुन्दर कथा से भावविभोर किया। ज०गु० श्री के द्वारा नौ दिन तक चलने वाले शिविर में प्रातः एवं सायं दोनों समय नियन्त्रित रूप से मङ्गल प्रवचन किया गया जिसमें अपने वैष्णवीय संस्कारों के हर पहलु पर विस्तार से सबको शास्त्रोक्त उद्धरणों सहित अवगत कराया गया कि किस तरह चारो वर्णो में वैष्णव होने के नाते श्रेष्ठ हैं हमारा क्या कर्तव्य है वैष्णव किसे कहते हैं वैष्णव कैसा होना चाहिए वैष्णवीयता कैसे धारण की जाती है कौन कौन से वे संस्कार है जिनके ग्रहण करने पर ही वैष्णव बनते हैं सिर्फ वैष्णवों के घर में जन्म लेने मात्र से ही आप वैष्णव नहीं हो सकते। संसार पथ प्रदर्शक करनेवाले श्रीवैष्णवाचार्य ही थे। बालक के जन्म के आठ वर्ष के पश्चात् उसे यज्ञोपवित्र संस्कार से सुसंस्कृत कर उसे द्विज बनाया जाता है तत्पश्चात श्रीवैष्णवाचार्य ही उसे सविधि कण्ठी प्रदान कर मन्त्र दीक्षा दीक्षित कर उसे वैष्ण वीयता प्रदान करते हैं। जो कि चारो वर्णों में श्रेष्ठ कही जाती है। वैष्णवीयता ग्रहण करने के बाद प्रत्येक वैष्णव के कई विशेष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्तव्य बन जाते हैं जिनका पालन करना नितान्त आवश्यक है। शिविर में प्रति दिन होनेवाली दिन में पांच वार वेदोक्त प्रार्थना आचार्यपीठ के विद्यार्थीयों द्वारा गाई जाती थी जिससे वातावरण में और निखार आ जाता था पार्थना एवं वेदवाणी जिसका सम्पूर्ण गान संस्कृत में ही होता था सुनकर आगन्तुकों के लिए संस्कृत के प्रति पूर्ण अनुराग और उष्णवों के दिलपर संस्कृत पर विशेष आकर्षण होता रहा। इस शिविर में भाग लेने वालों में मुख्य थे मोटीवरार-मोरबी पडधरी भावनगर अमरेली बडालाघेड जेतपुर कालासरी जामकंडोराणा पोरबन्दर सीनाणा घुमा (अहमदाबाद) साबरमती (अह०) मेमनगर (अह०) जेतलसर के अलावा शींगडा के स्थानीय वन्धुगण मुख्य थे। आचार्य पीठ के तत्त्वाधान में पीठ के शिष्य वृन्द अधिकारी शास्त्रीजी अध्ययनरत विद्यार्थीगण एवं साधु संन्तों के द्वारा की गई सारी व्यवस्था बडी ही सुन्दर एवं प्रशंसनीय रही। प्रतिदिन स्नान ध्यान सेवा पूजा एवं आरती के वाद दूध चाय कोफी अल्पाहार एवं फलाहार की व्यवस्था थी। श्रीमद्रामायण कथा एवं प्रवचन के वाद प्रसाद (भोजन) दोपहर में अल्पविराम के पश्चात् सामूहिक विचार विमर्श पुनः श्रीमद्रामायण कथा एवं आचार्य श्री का मङ्गल प्रवचन संध्या आरती के पश्चात सायंकालीन प्रसाद (भोजन) की बडी ही सुन्दर व्यवस्था की गई थी जो सर्वाङ्गरूप से आचार्यपीठ की थी रात्री में आगन्तुक जिज्ञासुओं एवं शींगडा निवासी स्व समाज के वन्धुओं के साथ सामूहिक धार्मिक सामाजिक चर्चा विचारों का आदान प्रदान में एक दूसरे के प्रति प्रेम भाईचारा एवं दूसरे के प्रति गहरी निकटता महसूस की गई। जिसकी मधुर स्मृति मानसपटलपर हमेशा छाई रहेगी यही इस संस्कार शिविर की मुख्य फलश्रुति रही। जो श्री ज्ञानार्जन जिज्ञासु कर पाये वह तो मुख्य विषय था ही लगभग सभीको इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिविर में जो कुछ भी जानने और सिखने को मिला उसकी झलक प्रत्येक के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। ज०गु० श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी का प्रखर ज्ञान विद्वत्ता एवं उनके द्वारा बताये गये गूढ से गूढ रहस्यों के प्रति सभी जिसासूओं की समाधानता को सुन्दर शैली पर अत्यन्त संतोष हुआ साथ ही सबको शिविर में आने का अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूती हो रही। कई महानुभाव लगातार १० दिन तक लाभ लेते पाये गये। बहुतोंने अन्तिम ३-३ ४-४ दिन उपस्थित होकर ज्ञानार्जन किया। बरसो से बसते मन में अनेक जटित प्रश्नों का शंका कुसंकाओं का इस शिविर में समाधान पाकर हर कोई आनन्द विभोर हो रहे थे विजयादशमी पर विशेष आयोजन इस दिन पर किये गये विशेष आयोजन की उत्सुकता और आगन्तुकों की हुई वृद्धि ही सबका ध्यान आकर्षित कर रही थी प्रातः से सायं तक व्यस्तमय कार्यक्रमों में सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार मन्त्र दीक्षा हवन इत्यादि प्रमुख थे। ११ बटुकों को पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से पीठ की ओर से मुंडन संस्कार स्नान विधि उपवस्त्रादि से पूर्ण तैयार कर सभी को यज्ञोपवित प्रदान की गई यह दृश्य अत्यन्त ही भावमय एवं प्रेरणादायी रहा। तत्पश्चात ज० गु० श्रीद्वारा सबको बारी बारी से श्रीराममहा मन्त्र दीक्षा से दीक्षित कर उनका वैष्णवी संस्कार सम्पन्न करवाया गया आगन्तुकोंमें से अनेकों ने भी ज. गु. श्री से श्रीराममहा मन्त्र दीक्षा ग्रहण की तत्पश्चात बटुकों के माता पिता एवं बटुकों द्वारा हवन में सामूहिक आहूतिया प्रदान करवाकर यज्ञोपवीत विधि पूर्ण हुई।

इस शिविर में प्रवचनों के समय आगन्तुकों ने भी अपने अपने विचार प्रकट किये। मोटीवरार वाले श्रीदलपतरामभाई महाराज जो कि कवि के नाम से अत्यन्त प्रसिद्ध है ज.गु. श्रीरामा नन्दाचार्य स्वरचित की १७ श्लोकी कविता जब सुनाई गई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो सभी ने शावासी की बोछारों से उनका खूब स्वागत किया तत्पश्चात 'हम वैष्णव हैं हम वैष्णव हैं हम वैष्णव ब्राह्मण हैं' नाम की रचना सुनाकर और भी भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर श्रीदलपतभाई महाराज एवं श्रीरामदास भाई चतुर्वेदी श्रीराम मन्दिर भावनगर को पीठ की ओर से स्मृति ग्रन्थ भेटकर उनका सम्मान किया गया।

इस सब आयोजन एवं सुन्दर व्यवहार से चरित सुन्दर वैष्णवी संस्कार प्रदान करने के लिये सबने आचार्य महोदय जगद्गुरु श्री एवं पीठ के प्रत्येक सहायता भाव तथा सादृश्य भाव से अत्यन्त ही आभार प्रकट किये हुए शीघ्र ही मिलने की अवसर पानेकी आशा के साथ ईश्वर से भावमय विदाई ली।

५ सरयुतीर्थ श्रीरामजी मन्दिर में भव्य ५

卐 श्रीवैष्णवाराधन 卐

कर्णावती नगर में प्रेम दरवाजा स्थित श्रीसरयुतीर्थ श्रीरामजी मन्दिर में साकेतवासी श्री म. रामशरणदासजी महाराज की पुण्य स्मृति में स्थानीय महन्त तथा श्रीरा. वि. वै. मण्डल के प्रधान अध्यक्ष श्रीम. महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीशिवरामदासजी महाराज के तत्त्वावधान में ता. ६-१०-९६ शुक्रवार को श्रीरामानन्द विरक्तवैष्णव मण्डल के भव्यतम श्रीवैष्णवाराधन का आयोजन रखा गया।

जिसमें मण्डल के करीब सभी सन्त महन्तों के अलावा श्रीप्रतिवादी भयंकराचार्य श्रीरामचन्द्रदासजी महाराज अयोध्या म. श्रीगजारामदासजी महाराज भीलवाडा शास्त्री श्रीरामकिशोरदासजी छाणी निर्मोही अनी के श्री म. नन्दरामदासजी महाराज आदि के अलावा सैकडों सन्त महन्त तथा हजारों सेवकों ने भाग लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञातव्य है श्रीरा० वि० वै० मण्डल के प्रथम अध्यक्ष साकेतवासी श्री म. रामशरणदासजी महाराज की पुण्यस्मृति में प्रतिवर्ष महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीशिवरामदासजी महाराज वृन्द वैष्णवाराधन का आयोजन करते हैं। अस्तु ।

श्रीरामचन्द्रदासजी परमहंस (अयोध्या) प्रेमदरवाजा से वेदान्त पीठ महामण्डलेश्वर स्वामी रामावतारदासजी (रत्न) के यहाँ तथा वहाँ से कन्टोलिया वाडी श्री स्वामी सियारामदासजी के यहाँ सदलबल पधारे। जहाँ आपका भव्य स्वागत हुआ ।

ले० म. श्रीतुलसीदासजी रामजी मन्दिर ओढव अहमदाबाद

५ साणन्द में श्रीरामानन्द विरक्तवैष्णव

मण्डल का भव्य श्रीवैष्णवाराधन ५

अहमदाबाद के पास साणन्द कस्बे में प्रसिद्ध धर्म स्थान श्रीगायत्री माता के मन्दिर में साकेतवासी श्रीबजरंगदासजी महाराज की पुण्यस्मृति में श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के भव्य तम श्रीवैष्णवाराधन का आयोजन ता. ५-१०-५५ गुरुवार को रखा गया ।

में श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के करीब सभी सदस्यों के अलावा जगदीश मन्दिर के महन्त श्रीरामेश्वरदासजी निर्मोही अनी के श्रीमहन्त नन्दरामदासजी महाराज के अलावा सैकडों अन्य सन्त महन्त अभ्यागतों ने भाग लिया ।

इस अवसर पर स्थानीय सन्त श्रीरामकृपालदासजी महाराज को मण्डल की तरफ से महन्ताई चादर प्रदान की गई । स्थानीय सेवक श्रीमुन्नाभाई लालजी भाई आदि की सराहनीय सेवा रही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीसम्प्रदाय निष्ठ विद्वान् वर्य श्रीरामाचार्यजी महाराज का सविशेष योगदान रहा ।

ले० रामावतारदासजी (रत्न) वेदान्तपीठ

'गोलोकवास'

श्रीरामानन्दीय दिगम्बर अखाड़ा में सन् १९५४ प्रयागराज कुम्भ से आकर ता. २।९।९५ तक लगातार श्रीविजयराघव भगवान् की पूजा–रसोई निशि दिन करते–करते पुजारी आजयकृष्णदासजी अचानक हृदयगति रुकजाने से ३।९।९५ को गोलोकवासी हो गये उनका जन्म श्रीजगन्नाथपुरी जिले के नाहरपदा तहसील के पास अपीडी गाँव सामन्तराव पदवी धारण करनेवाले वंश में हुआ था उनके गोलोकवास हो जाने से हमारा दिगम्बर अखाडा शून्य हो गया । श्रीवृन्दावन विहारी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने धाम में पार्सद बनाकर निशि दिन सेवा में रखने की कृपा करें तथा उनके मात् परिवार जिन्होंने उनकी अत्यन्त सेवा किया उन सब को आत्म शक्ति प्रदान करने की कृपा करें ।

ले० श्रीमहन्त हरीदासजी महाराज दिगम्बर अखाडा नासिक

॥ श्रीराम ॥

वयोवृद्ध म. श्रीरामलखनदासजी रामायणी रणछोडजी मन्दिर कडवापोल ने श्रीरामानन्द वेदान्त को १००१ रुपये की सहायता प्रदान की अत एव धन्यवाद म.म. रामावतारदासजी (रत्न)

॥ श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के स्थानोंपर श्रद्धा के साथ श्राद्ध सम्पन्न ॥

कर्णावती नगर में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रद्धा के साथ श्राद्ध मनाये गये । जिसमें श्रीरा. वि. वै. मण्डल के अन्य वैष्ण वाराधन हुए ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ता. १०।९।९५ को साकेतवासी पुजारी श्रीलक्ष्मणदासजी महाराज सरयुतीर्थ प्रेमदरवाजा में मनाया गया। ता. १२।९।९५ को बडकी पोल स्थित श्रीरणछोडजी मन्दिर में गौलोकवासी मौना रायणदासजी महाराज का श्राद्ध श्रीमहन्त जयरामदासजी द्वारा परि पूर्ण हुआ। ता. १३।९।९५ को वीर विजय हनुमानजी मन्दिर में मौनी श्रीगोविन्ददासजी महाराज का श्राद्ध मनाया गया। ता. १८।९।९५ को अभिनव वाचस्पति पण्डित सम्राट् श्रीवैष्ण वाचार्यजी महाराज का श्राद्ध वेदान्तपीठ सारंगपुर में महामण्ड-लेश्वर रामावतारदासजी (रत्न) द्वारा परिपूर्ण हुआ। ता. १९।९ ९५ को भंडारी पोल श्रीहनुमानजी मन्दिर में अवधविहारीदासजी महाराज द्वारा स्व. गुरुदेव श्रीपुरुषोत्तमदासजी महाराज का श्राद्ध मनाया गया। इसीदिन बोपल ग्राम श्रीराधाकृष्ण मन्दिर में वि-द्वान् वर्य श्रीमहावीरदासजी महाराज द्वारा श्रीमथुरादासजी महाराज का श्राद्ध सम्पन्न हुआ। ता. २१।९।९५ को श्रीधराचार्यजी महा राज द्वारा वैकुंठवासी श्रीरघुनाथदासजी महाराज का श्राद्ध श्रीसत्य नारायण मन्दिर करुआपोल में भव्यता के साथ मनाया गया। इसी दिन श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के प्रथम अध्यक्ष साकेतवासी श्रीम. स्वामी श्रीरामशरणदासजी महाराज का श्राद्ध वर्तमान अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीशिवरामदासजी तथा मौनी श्रीदीनदयालदासजी द्वारा सरयुतीर्थ श्रीरामजी मन्दिर प्रेमदर वाजा में श्रद्धा के साथ मनाया गया। श्रीजगदीश मन्दिर में साकेतवासी महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामहर्षदासजी महाराज का श्राद्ध ता. २१।९।९५ शनिवार को परिपूर्ण हुआ।

इसके उपरान्त भी कई धर्म स्थानों पर श्राद्ध परिपूर्ण हुए। जहाँ श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के वैष्णवोराधन भव्यता या आंशिक रूप से मनाये गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्यं जयति ॥ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ॥ नानृतम्

आनन्दभाष्यकर्त्ता च तत्सिंहासनसंस्थितः ।
नवाब्दे मङ्गलं कुर्याद् रामानन्दोजगद्गुरुः ॥

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी एवं उनके दिव्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी इस कार्तिकी नव वर्ष में आप सभी का मङ्गल करें।

श्रीरामानन्दाचार्यपीठश्रीशेषमठके धर्मप्रचारविभागसेधर्मप्रचारार्थप्रकाशि
॥ मुद्रक–श्रीआनन्दभाष्यमुद्रणालय ॥

आचार्यपीठ

श्रीकोसलेन्द्रमठ पो. पालडी, अहमदाबाद–३८०००७
प्रा॰ सं॰ प्रति श्री.....

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu